GURUJI
OF GURGAON

GLIMPSES UNBELIEVABLE
VOLUME-V

‘‘अब मैंने सब आटोमैटिक कर देना है’’ गुरुजी ने कहा

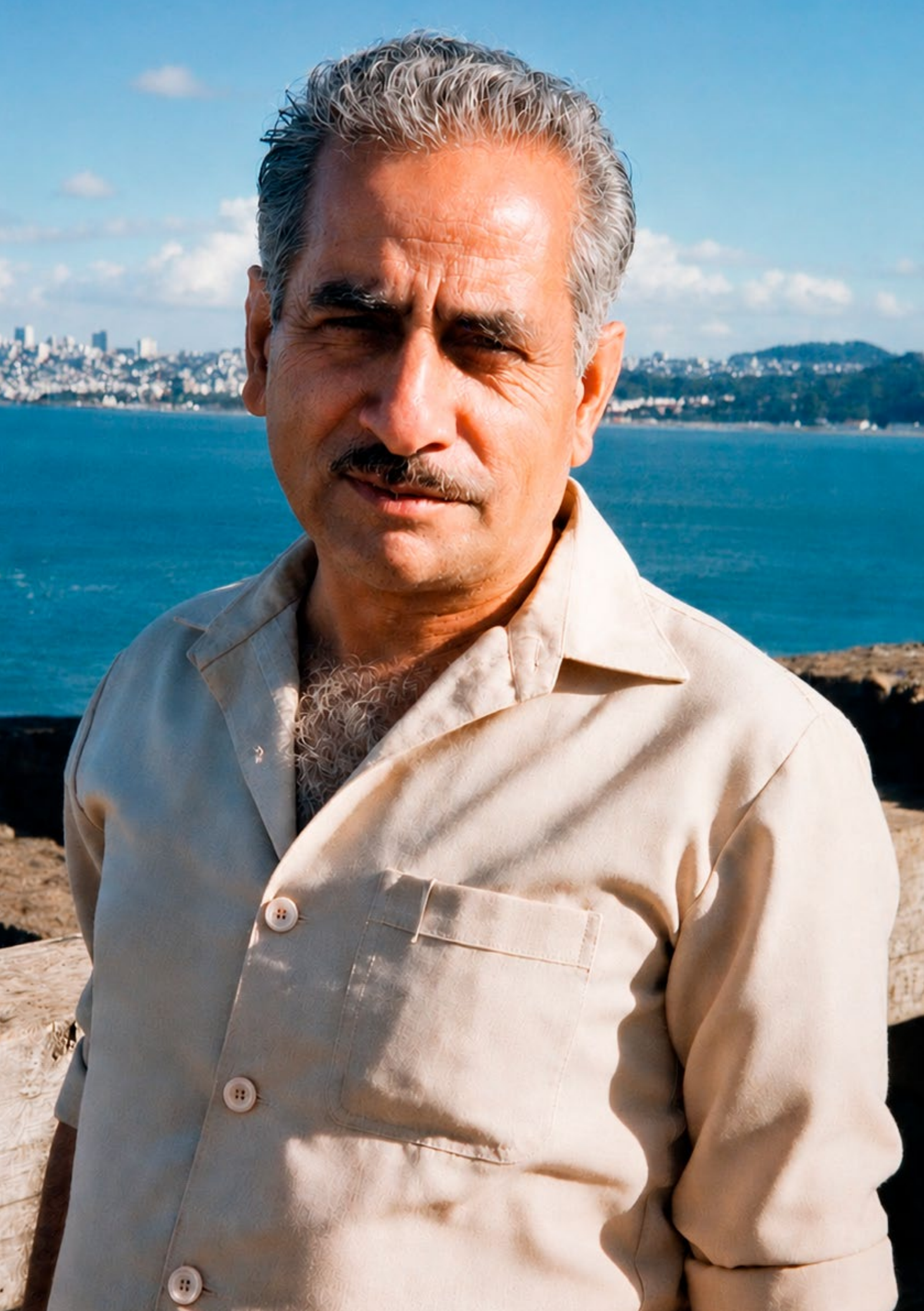

अविश्वस्नीय झलकियाँ
भाग-5

‘राज्जे’ - गुरुशिष्य
(राजपॉल सेख़री)

श्री राजपॉल सेख़री के पास
कॉपीराईट © 2010 सुरक्षित

इस पुस्तक के मुद्रण का, लेखक के पास पूर्ण नैतिक अधिकार है। इस पुस्तक या इसके किसी भाग को, किसी हालात में प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना छापना, वर्जित है।

इस पुस्तक में लिखी घटनाओं का, सुन्दर रीति से वर्णन करने के लिये, किसी बनावटी या झूठे चरित्र का निर्माण नहीं किया गया है। इसमें उल्लिखित नाम व घटनाऐं, सिर्फ लेखक के नज़रिये से लिखी गयी है।

प्रथम संस्करण 2017
भाग-5

प्रकाशक
श्री राजपॉल सेख़री,
19/77, पंजाबी बाग (पश्चिम)
नई दिल्ली.110026,
भारत
mahaguru9@hotmail.com
www.gurujiofgurgaon.com

मेरे गुरुजी

भाग-5

लेखक की कलम से ....

गुरुजी के एक शिष्य के मन के या फिर उसके आत्मिक भाव
सोमवार, 16-9-2011, सुबह 6 बजे - पंजाबी बाग
स्थान, गुरुजी के बेडरूम में!

भाव :- आप को तो पता है! पूरा पता है आप को, कि आप कौन हैं? अगले पल से लेकर अंत तक क्या होने वाला है और कैसे शुरु होगा और कैसे समाप्त होगा यह भी पूरा पता है आपको! इस होनी को कैसे और कब बदलना है यह भी पता है आपको! आपके साथ कोई बात शुरु करता है तो आपको उसकी पूरी बात का पहले से ही पता होता है; मगर आप बिलकुल भोलेपन से उसकी पूरी बात सुनते रहते हैं। मगर कई बार कहने वाले को बीच में रोक कर कह देते हो कि आप को सब पता है और कभी पूरी बात सुन भी लेते हो। हर एक के मन, दिल और दिमाग के अंदर पूर्ण स्वतंत्रता से घूमते रहते हैं आप!

लेकिन गुरुदेव, मैं क्या करूं? मुझे तो सिर्फ आप ही आप दिखते हो ऊपर आपके बेडरूम में और वो भी तब, जब आप री इच्छा हो,!!

प्रणाम स्वीकार करे प्रभु

राज्जे, गुरु शिष्य,
(राजपॉल सेख़री)
1 जनवरी, 2012

...आइए, अब पंचम भाग का आनन्द लीजिए...

: : अनुक्रमणिका : :

205. गुरुजी ने सीता राम जी से कहा,''ओये सेतु, किसी को बताना मत कि मैं यहाँ पर हूँ''। 12-13

206. गुरुजी के एक शिष्य की बेटी का अम्रीका में कार दुर्घटना से साफ़ बचना। 14-17

207. गुरु जी ने कहा, रज्जे, इसका काम नहीं होगा" । 18-19

208. करुणा निधान, सर्वज्ञ और सर्वव्यापी गुरुदेव- अपने भक्त की पुकार सुनने के लिए रात के तीन बजे भी जागृत । 20-21

209. तू 41 दिन पैदल नीलकंठ धाम जाएगी और समाधी की तीन परिक्रमा रोज़ करेगी । 22-24

210. आराम करो और आनंद लो... गुरुजी की ईश्वरीय इच्छा को प्रणाम करो। 25-27

211. पेट्रोल के दाम बड़े तो मैं और सुरिंदर तनेजा परेशान हो गए. 28-29

212. अब मैंने सब आटोमैटिक कर देना है । 31-32

213. गुरुओं के गुरु, गुरुजी के सन्मुख मेरी पत्नी, गुलशन सेखरी की पत्यक्ष अवस्थां। 33-35

214. गुरुजी की शिवरात्रि 37-41

215. भानु के पिता डी एस जैन को आधी रात के समय ज़ोर की खांसी और उसी समय गुरुजी प्रकट हो गए। 43-44

216. पुरानी सुस्मृतियाँ -- गुरुजी के साथ 1976 45-46

217. गुरुजी की फिएट कार में आगे गुरुजी थे और पीछे की सीट पर अजय रीटा। 47-51

218. यह क्या करते हो आप बच्चों के साथ? आधी रात को भी हाथ में डंडा लिए रहते हो, क्यूँ गालियाँ दे रहे हो बेचारे को? 53-54

219. आगे बढ़ो और यह सेवा जारी रखो, मै सब सम्हाल लूँगा। 55-58

220. गुरुजी कहने लगे, "तो तू अपने गुरु से ज्यादा अपने चपड़ासी पर विश्वास करता है। 59-61

221. गुरुजी ने आशा सेखरी से पूछा, "तेरा पति टूअर से वापिस आ गया है तो कितने चैक साथ लाया है?" 62-64

222. प्रदेश में स्थित, कथोक नामक शहर है जहाँ एक बार गुरुजी का टूअर का प्रोग्राम बना। 65-66

223. आज 4 जुलाई, 2012, गुरु पूर्णिमा के बाद का अलग दिन। 67-68

224. गुरुजी आए, खड़े हुए और तेल की कड़ाही की तरफ देखने लगे और तेल गरम हो गया पूरियां तलने के लिए। 69-70

225. गुरूजी का समाधि स्थल, नीलकंठ धाम के नाम से प्रख्यात है। 71-72

226. गुरूजी के वक्ष पर ओम के दर्शन । 73-74

227. अतः सीताराम जी ने पूछा, "गुरूजी यह धाव कैसा था?" 77-78

228. गुरूजी ने आँखें खोली, मुक्ता की ओर देखा और मिस होली चाइल्ड का वरदान दे दिया। 79-80

229. गुड़गाँव से दिल्ली तक बिना ब्रेक लगाए। 81-83

230. गुरुजी ने कहा, "बेटा, एक जग लस्सी का बनाओ और सब को पिला दो। 84-85

231. गर्भ धारण होना हर विवाहित स्त्री का सपना होता है... 86-88

205. गुरुजी ने सीता राम जी से कहा, ''ओये सीतु, किसी को बताना मत कि मैं यहाँ पर हूँ''।

बात यह थी कि गुरुजी जनकपुरी में पधारे थे और पहुँचते ही उन्होंने अपने शिष्य सीताराम जी को आदेश दिया के किसी को बताएं नहीं कि वे वहाँ विराजमान हैं। शायद भीड़ से बचना चाहते थे और एकांत चाहते थे। इसी कारण उन्होंने उपरोक्त आदेश जारी किया। जनकपुरी सीताराम जी का निवास स्थान है और गुरुजी ने वहाँ अपना स्थान बनाया हुआ है। लोग शाम को अपने दुःख ले कर वहाँ आते और सीताराम जी सेवा के माध्यम से उनके दुखों और परेशानियों का निवारण करते थे। लेकिन दिन के समय वहाँ कोई नहीं

आता और शायद इसीलिए गुरुजी ने एकांत के तात्पर्य से जनकपुरी को चुना (उस दिन)।

खबर पाते ही मैं भागा और जनकपूरी पहुँच कर सीधा गुरुजी के चरणों में!

मेरे सिर पर आशीर्वाद का हाथ रख कर कहने लगे, ''अरे? तू कैसे आ गया,तुमको कैसे पता चला कि मैं यहाँ पर हूँ?''

मैं तो चुप था, मगर उन्होंने सीता राम जी की तरफ देखा और पूछने लगे, "क्यों सीतू, तूने बताया इसे? तुम्हें तो मेरा आदेश था कि किसी को नहीं बताना?''

बड़े लाडले थे सीताराम जी और वे यह जानते भी थे। कहने लगे, "गुरु जी, यह कैसे हो सकता है के सीताराम आप के हुकुम की अदूली करे?"

थोड़ी देर के लिए गुरू जी ने फिर सीताराम जी की आँखों में देखा और डांट कर कहने लगे,"

"तो फिर किस बच्चे से फोन कराया था इसको"?

अब तो पकड़ में आ गए सीताराम जी। क्योंकि उनकी बेटी ने फोन किया था मुझे की गुरुजी जनकपुरी में हैं और साथ ही सावधान भी किया था कि पापा का नाम नहीं आना चाहिए।

लेकिन यह तो गुरुजी हैं। इनसे कुछ भी नहीं छिपाया जा सकता, जैसे ईश्वर से...

आप को बारम्बार प्रणाम है गुरुदेव---

206. गुरुजी के एक शिष्य की बेटी का अम्रीका में कार दुर्घटना से साफ़ बचना ।

गुरुजी के एक शिष्य की बेटी का अम्रीका में कार दुर्घटना से साफ़ बचना ..गुरुजी का एक करिश्मा। अपूर्व श्रद्धा और विश्वास से भरपूर अपनी कार दुर्घटना का विवरण सुनाते समय मुक्ता बजाज की आँखों से कई बार आनंद के आंसू दिखे . अपने गुरुजी को बचपन से ही समर्पित, ''बापू'' नाम से स्म्भोधन करने वाली मुक्ता बजाज ने, उसने कहना शुरु किया, ''मेरी एक आवाज़ पर चले आए मेरे गुरुदेव मेरी रक्षा करने '', मेरे जीवन का आधार हैं मेरे गुरुजी।
उसी की वाणी से प्रस्तुत है पूरा विवरण :

उसने कहना सुरु किया :
अमीका की खुली सड़क पर एक पड़ोसन के साथ कहीं जा रही थी। वह गाड़ी काफी तेज़ चला रही थी। अनायास मेरे मुख से निकला.. बापू .. !!! सामने से लाल रंग की कार करीब 150 किलो मीटर की स्पीड पर सीधी अपनी ओर आयी और सब कुछ उड़ा दिया उसने .. एक्सीडेंट हुआ , अति भयानक, दोनों गाड़िया पूरी तरह से नष्ट हो गयीं । हमारी गाड़ी के टायर टूट कर हवा में उड़ रहे थे .. और फिर मेरी आँखें बंद हो गयीं . जाने कब आँख खुली तो मुख से शब्द निकले ''जय गुरु देव''।
जहाँ तक मुझे याद है, मैंने यह शब्द कभी नहीं कहे, आज यह कैसे निकले मेरे मुख से, मुझे नहीं मालूम फिर पुलिस आयी हेलीकाप्टर में और दोनों गाड़ियों से लोगों को निकाला और अस्पताल ले गए। गाड़ियों को देखो तो लगता था की कोई भी बचा नहीं होगा, पर सब सही सलामत थे. किसी की भी हड्डी तक नहीं टूटी थी. थोडा सा उपचार करने के बाद हमें घर भेज दिया गया अपने जीवन काल में ऐसा भयानक दृश्य पहली बार देखने को मिला.

सामने से आती हुई गाड़ी को देख कर जब मेरे मुख से शब्द। ''बापू'' निकला था तो ऐसे लगा की गुरु जी आये और मेरे आगे हैं! पूर्ण रक्षक बन कर उन्होंने होनी को टाल दिया। चलती गाड़ी में एक आवाज़ दी मैंने ''बापू'', और उनहोंने सुन ली ? आफरीन गुरु देव, आफरीन।

दुःख और किसी अन्य भयानक परिस्थिति में ऐसा देखा गया है की लोग भगवान को आवाज़ देते हैं ''हे भगवान'': हमारी रक्षा करो ''...ष्बचाओ प्रभो'' इत्यादि।

विश्वास के साथ आवाज़ इसलिए देते है कि ईश्वर हर समय हर जगह विघमान है अतः हमारी आवाज़ सुनेगा और हमारी रक्षा करेगा।

यह कन्या गुरूजी को इसी नाम से , यानी ''बापू'' से ही सम्भोधित किया करती है। जब वे शारीर में थे तब भी और आज भी । इसके मुख से शब्द ''बापू'' निकलते ही मेरे हजूर प्रकट हो गये और कर दी रक्षा। तो बात यूं हुई कि ईश्वर और गुरूजी एक ही हैं. बहुत ऊंचे भाग्य हैं हमारे कि ऐसे ईश्वर तुल्य गुरु महाराज ने हमें अपने संरक्षण में लिया हुआ है।

कोटि कोटि प्रणाम, हे गुरुदेव !

अक्सिडेंट के अगले दिन

एक कुर्सी पर विराजमान हैं, रूप (फोटो है गुरूजी का जिस में गुरूजी और माताजी, दोनों के गले में हार हैं)

यह रूप अमरीका में गुरु जी शिष्य की छोटी बेटी बिंदु के घर में दीवार पर लगा है। यहीं पर ठहरी हुई थी उसकी बड़ी बहन, जिसका एक्सीडेंट हुआ था एक दिन पहले और वोह साफ़ बच गयी थी। बाथरूम से जैसे ही वो बाहर निकली तो उसकी नज़र उस फोटो पर पड़ी। आवाज़ दे कर उसने अपने पिता को बुलाया और फोटो की तरफ इशारा किया और कहा, ''यह देखिये पापा, इसको क्या हो गया है''! बड़े आश्चर्य की बात थी कि शीशे के फ्रेम में जड़ी फोटो का बॉंयां हाथ और दांयीं टांग पूरी तरह से खराब हो चुकी थी। ऐसे लग रहा था कि जैसे पानी में भीग गयी हो। मगर कल तक तो बिलकुल ठीक थी, यह अचानक क्या हो गया! तभी गुरु

शिष्य ने बेटी को समझाया कि इन्होंने किसी की टांग और बाजू को बचाया है। बेटी ने अपना हाथ और टांग दिखाए और कहा, पापा देखो मेरी टांग और बाजू में लगी कल हुए अक्सिडेंट की चोटें।। मुझे ही बचाने के लिए इन्होंने मेरा दुःख अपने ऊपर लिया है.

शिष्य ने कहा, बेटा, आप मत देखो, और फोटो दीवार से उतार कर पेपर में लपेट दी और जल प्रवाह करा दी।

काफ़ी देर तक, फोटो के ख़राब होने की स्थिति पर विचार करता रहा – आखिर थोड़ा सा बुद्धि प्रयोग किया तो अंतरात्मा से आवाज़ आती है, "रज्जे, तुम्हारे बच्चे के विश्वास को दृढ़ता देने के लिए ऐसी रचना की है मैंने।"

आफ़रीन गुरुदेव, आफ़रीन... इतना कुछ करते हैं आप.....

एक तरफ जीवन की रक्षा करते हैं और दूसरी तरफ हमारे विश्वास का भी इतना ध्यान! कहीं कोई ग़लत अनुमान न लगा पाए...
कोटि – कोटि प्रणाम स्वीकार करें गुरुदेव और ऐसे ही अंग. संग रहने का वरदान दें !

207. गुरु जी ने कहा, रज्जे, इसका काम नहीं होगा”

लगातार कई घंटे लाईन में लग कर जब लोग गुरूजी के सन्मुख पहुँचते तो जो कुछ भी वे मांगते, गुरूजी हमेशा यही कहते कि जाओ बेटा तुम्हारा काम हो जायेगा। लेकिन एक दिन कुछ अजीब सा हुआ, एक आदमी आया और गुरु जी ने कह दिया की तुम्हारा काम हो जाएगा। जैसे ही वो गया, गुरूजी ने मुझे कहा, “राज्जे इसका काम नहीं होगा”।

मैंने कहा, पर गुरु जी, आपने तो उसे कहा था कि जा, तेरा काम हो जाएगा? गुरूजी कहने लगे, पर यह अपनी बारी से

नहीं आया, लाईन में घुस कर किसी और की बारी से आया है" जो लोग 6,7 घंटे से लाईन में खड़े हैं, उनमें आकर घुसा है यह एक घंटा पहले। सब से छिप सकता है लेकिन मुझसे कभी नहीं। वो मालिक श्रद्धा और विश्वास देखता है, सिर्फ चेहरा नहीं। इसने अगर अपना भाग्य बदलवाना है तो किसी को धोखा न देकर अपनी बारी से मुझ तक पहुँचे, अगले बड़े वीरवार इसका काम हो जाएगा। बड़े आश्चर्य की बात है कि गुरूजी को अन्दर बैठे-बैठे बाहर का भी सब पता होता है वाह मेरे गुरूदेव! हमारे ईश्वर, महागुरूदेव, कोटि-कोटि प्रणाम स्वीकार कीजिए। सब पर अपनी कृपा बनाए रखिए जी।

208. करुणा निधान, सर्वज्ञ और सर्वव्यापी गुरुदेव- अपने भक्त की पुकार सुनने के लिए रात के तीन बजे भी जागृत --

करीब तीन बजे सुबह, जब डाक्टर अपने कमरे में बैठा कॉफी पी रहा था, वो दुबारा हस्पताल में अपनी बहन को देखने हेतु आयी, देखते ही भौंचक्की, सी रह गयी! अरे, यह तो बिलकुल ठीक ठाक है।

आधा घंटा पहले जब डाक्टरों ने अपने हाथ खड़े कर दिए और कहा था कि अब वो कुछ नहीं कर सकते, सिर्फ ईश्वर को प्रार्थना करो इसके जीवन के लिए तो यह भाग कर गुरुजी के स्थान पर, पंजाबी बाग गयी थी। रात का समय था इसलिए मेन गेट बंद था। अतः वो बाहर ही सड़क पर

खड़ी हो गयी। ऊपर की ओर गुरूजी के बेडरूम की तरफ देखते हुए प्रार्थना करने लगी, कि हे गुरूदेव, रक्षा कीजिए मेरी बहन की और फिर वापस अस्पताल आ गई उसे देखने के लिए।

जैसे ही वो वापस पहुँची, डाक्टर उसके पास आया और पूछने लगा कि वह कहाँ गयी थी और किसे मिलकर आई है..? डाक्टर फिर कहने लगा," आप के जाने के बाद, मैं हताश हो कर मरीज़ के बारे में चिंतित बैठा था कि अचानक किसी ने पीछे से मेरा कन्धा थपथपाया और मुझसे कहा कि इसे वो इंजेक्शन लगाओ। मैंने वैसो ही किया और देखते ही देखते मरीज़ की हालत सुधर गयी। मेरी हैरानगी की सीमा नहीं थी, पता नहीं कि आप कहाँ गयी थी पर मैंने फैसला कर लिया कि आप इस आधी रात को जिस से मिल कर आयी हो उसी ने मेरा कन्धा थपथपाया और इस इंजेक्शन को लगाने का आदेश दिया। कृपा करके मुझे बताओ कि आप किससे मिलकर आयी हों, "डाक्टर ने कहा"

बहुत आश्चर्य!! मैं गदगद हो गया इस लड़की का विश्वास देख कर, कि गुरूजी ने गेट के बाहर खड़ी इस लड़की को देखा और इसकी प्रार्थना सुनी और तुरंत स्वीकार कर ली और मृत्यु के समीप इसकी बहन को जीवन दान दे दिया. . ऐसी गुरूभक्ति और ऐसे गुरू भक्त को मेरा प्रणाम है! और, वाह गुरूजी वाह! आपका स्टाईल भी देखने योग्य है साहिब!!! आधी रात को भी जागते रहते हैं आप अपने भक्तों के लिए, ऐ मालिकों के मालिक! प्रणाम --अनगिनत प्रणाम हे गुरूदेव!

209. तू 41 दिन पैदल नीलकंठ धाम जाएगी और समाधी की तीन परिक्रमा रोज़ करेगी

मीना की बहन रजनी, संतान के लिए प्रार्थना किया करती थी।

उसकी शादी हुए 9 वर्ष बीत चुके थे मगर अभी तक संतान की प्राप्ति नहीं हुई थी। अन्य लोगों की तरह उसने भी स्थान पर आकर कई बार संतान की इच्छा प्रकट की और हमने भी कई बार आशीर्वाद दिया। लेकिन बात कुछ बनी नहीं। एक बार वो तंग आ कर खीज कर बोली की आप सब की इच्छाएं पूरी करते हैं, जब मेरी बारी आती है तो मेरा काम नहीं करते। बार बार उसके गिले। शिकवे सुनने के बाद

मैंने गुरूजी को स्मरण किया और प्रार्थना की , ''गुरूजी, इससे मेरी जान बचाईये''.. तो गुरूजी ने उसके लिए एक आदेश दिया जो मैंने उसे एक दिन कह दिया, ''ठीक है, बच्चा हो जायेगा लेकिन एक शर्त है की तू 41 दिन पैदल नीलकंठ धाम जाएगी और समाधी की तीन परिक्रमा रोज़ करेगी''। उसने हाँ कह दी और उस दिन के बाद संतान की बात बंद हो गयी ।

समय बीतता गया और एक दिन उसने अपने गर्भवती होने की सुन्दर सी सूचना दी . सुन कर मुझे अति प्रसन्नता हुई और साथ ही गुरूजी से प्रार्थना करने लगा कि अब आपकी कृपा की आवश्यकता नौ मॉस तक लगातार होनी चाहिए हुजूर।

पूछने पर पता चला कि उसने 41 दिन में पूरे 41 दिन ही धाम की पैदल यात्रा की थी, बिना धूप और बारिश की परवाह किये . कोई छूट नहीं और कोई बहाना नहीं। उसकी आस्था और विश्वास ने गुरूजी को मना ही लिया और वो माँ बन गयी। उसने एक सुन्दर सी बेटी को जनम दिया। कुछ वर्ष बिताने पर उसने फिर कहा की अब उसे एक पुत्र भी दे दीजिये। कमाल है गुरूजी का मूड । वह फिर गर्भवती हो गयी और एक पुत्र का जन्म हुआ. अब वह दो बच्चों की माँ है और बड़ी प्रसन्न है। दोनों बच्चों को भी गुरु भक्ति के संस्कार उपलब्ध हैं।

1991 में गुरूजी ने शरीर का त्याग किया था।उनके ईश्वरीय शरीर को नजफगड़ गाँव, नयी दिल्ली में लाया गया और एक निर्धारित धरती पर विधि पूर्वक संस्स्कार किया गया था इसी पवित्र धरती पर गुरूजी की समाधि की स्थापना और नीलकंठ धाम का निर्माण हुआ था आध्यात्मिक जगत में यह स्थल एक पूर्ण तीर्थ है जहाँ हजारों की संख्या में भक्त आते हैं, समाधी पर फूल अर्पण करके परिक्रमा करते हैं।

परिक्रमा करने के पश्चात जो भी इच्छा करते हैं वो पूर्ण हो जाती हैं । आज 1996 में, यानी 5 वर्ष बाद गुरूजी ने उसकी संतानकी प्रार्थना वैसे ही स्वीकार की जैसे 1991 से पहले स्वीकारते थे।
यह सब देख कर गुरूजी की आभा, प्रतिभा बयान करने को बहुत मन करता है पर उपयुक्त शब्द नहीं मिलते। पानी का एक छोटा सा तालाब भला समुद्र की व्याख्या कैसे करे ।

बार बार प्रणाम .. हे भोले साईं, मेरे कृपा निधान गुरूजी ।

210. आराम करो और आनंद लो...
गुरूजी की ईश्वरीय इच्छा को प्रणाम करो

आराम करो और आनंद लो... गुरूजी की ईश्वरीय इच्छा को प्रणाम करो ; यह बात मोबाइल फोन सन्देश के माध्यम से मेरे और भानु प्रताप के बीच, जून 2013 को हुई जब मैं अमेरिका में था)

यह घटना सन 2013 की है और गुरु पूर्णिमा के महान दिन में कुछ ही समय शेष था। बीते वर्षों के विश्लेषण के अनुसार इस बार भी भीषण गर्मी के आसार नज़र आ रहे थे। हालांकि कुछ एयर कंडिशनर लगाए जा चुके थे परन्तु इतने

बड़े हॉल और इतने सारे भक्तजनों के लिए यह इंतज़ाम काफी नहीं था। बहुत गर्मी और हुम्मस का अंदेशा था।
अपने ट्रस्ट के प्रबंध के लिए एक पद पर नियुक्त होने के कारण आने वाले भक्त जनों की सुविधा का ध्यान रखना अनिवार्य है। गुरु पूर्णिमा के दिन गर्मी का अंदाजा लगाने के बाद मैंने और प्रबंध अधिकारीयों से सलाह करने के बाद निर्णय लिया के गुरुजी की प्रतिमा वाले हॉल में पूर्ण वातानुकूलित प्रबंध करना अनिवार्य है। कारण, यहाँ करीब 200 भक्तजन सारा दिन प्राताकाल से रात तक रहेंगे और इसके अलावा बहुत सारे शिष्य भी सेवा में रत होंगे। शिष्य गन भक्तजनों को आदरपूर्वक गुरुजी के चरणों में नारियल अर्पण कराते और फिर दूसरे शिष्य उसपर तिलक लगा कर बाकी की जानकारी देते और जहाँ आवश्यकता हो ज्ञान भी देते। गुरुपूजा के बाद अगले नौ दिन की क्रियाएँ समझाना इत्यादि बहुत सी जानकारी की आवश्यकता होती है। देश विदेश से आकर गुरुजी के भक्त घंटों लाइन में खड़े हो कर अपना अपना नारियल गुरुजी के चरणों में समर्पित करेंगे और फिर शिष्यों के समक्ष उस पर तिलक लगवान्येगे .. और शिश्यगन भी इस हॉल में सुबह से रात तक बैठ कर उन्हें आवश्यक ज्ञान देंग। गर्मी और हुम्मस के कारण आनंद में काफी बाधा होने का अनुमान है। अतः इस सारे हॉल को पूर्ण वातानुकूलित करना आवश्यक है। इस संदर्भ में मैंने अन्य प्रबंध के अधिकारिओं से औपचारिक रूप से बात की और फैसला ले लिया। मुझे अचानक अम्रीका जाना पड़ गया और शायद कुछ बात करना शेष रह गया था, अतः मैंने भानु प्रताप को माता रानी से आज्ञा लेकर काम शुरु करने का आदेश दे दिया अम्रीका से। किसी कारण वश भानु ने अपनी असमर्थता बताई और कहा, ''ऐसा लगता है की काम रुक गया ह''। अब गुरु पूजा के दिनों में गर्मी को झेलना ही पड़ेगा। अपने को असहाए जान कर मैंने भानु को फोन

द्वारा निम्नलिखित मैसेज भेजा : .
''आराम कर और आनंद ले . माथा झुका और गुरूजी की सर्वपरी इच्छा में डुबकी लगा और होनी को होने दे'' और कुछ समय के उपरान्त मैं वापिस इंडिया आ गया। गुरु पूर्णिमा से दो दिन पहले अचानक मुझे ज्ञात हुआ कि हॉल पूर्ण रूप से वातानुकूलित हो चूका है। आश्चर्य .. यह कैसे संभव हुआ ? किसने किया है यह ?
पूछने पर पता चला कि किसी गुरु भक्त ने तीन बड़े बड़े यूनिट किराए पर लेकर हॉल में लगा दिए हैं। मैं स्तब्ध रह गया। और आनंद मग्न हो कर सोचने लगा कि येही है गुरूजी की ईश्वरीय इच्छा, जिसके बारे में मैंने भानु प्रताप को मैसेज किया था अमरीका से। कमाल है, हे गुरुदेव, आपने अपनी ईश्वरीय इच्छा के दर्शन करा दिए हम सब को और बिना हमें कुछ बताये हमारी इच्छा पूर्ण कर दी किसी को कुछ भी करना नहीं पड़ा। किसी और भक्त को प्रेरित कर, हमारा काम कर दिया। निश्चित समय से पहले किसी भक्त के मन में विचार डाला और उसने अपने भाग्य की सराहना करते हुए यूनिट किराए पर ले कर हॉल में लगवा कर आप के अनगिनत बच्चों को गर्मी से मुक्ति दिला दी और उसने इसे सेवा का रूप दे दिया और साथ ही अपने आप को भाग्यशाली समझा। आप ने अपनी ईश्वरीय इच्छा का साक्षात्कार करा दिया हम सब को हे गुरुओं के गुरु . महागुरुदेव! कमाल की बात तो यह है कि आप जी ने मेरी और भानु की मैसेज पढ़ लिया था और बिना बताये हमें निहाल कर दिया।

बारम्बार प्रणाम साहेब जी। हे सुखों से सागर
अपनी कृपा बनाए रखना।

वाह ! हे गुरु देव आप पूर्ण रूप से इश्वर ही हैं

211. पेट्रोल के दाम बड़े तो मैं और सुरिंदर तनेजा परेशान हो गए ।

पेट्रोल के दाम बड़े तो मैं और मेरे गुरु भाई सुरिंदर तनेजा परेशान हो गए. कारण यह कि अब गुरूजी गुडगाँव से अपने दिल्ली आफिस आएंगे तो स्कूटर में पेट्रोल का खर्चा बढ़ जाएगा । अपनी मासूमीअत के कारण हम यह नहीं समझ पाए कि जिनकी फ़िक्र हम कर रहे हैं वे तो हम सब के मालिक हैं और सब के बिगड़े काम सँवारते हैं।
अपनी मूर्खता के वशीभूत हम दोनों ने एक प्लान बनाया जो इस तरह था : सुभाष जी मेरे शोरूम में ड्यूटी करता था और वह भी गुडगाँव से दिल्ली गुरूजी के साथ ही उनके

स्कूटर पर उनके आफिस तक आता था और वहां से बस लेकर दरयागंज शोरुम पहुँच जाता था । उस दिन शाम को गुरुजी का दरयागंज आने का प्रोग्राम था अतः मैंने उनसे प्रार्थना की कि वे अपने आफिस पहुँच कर सुभाष को स्कूटर दे दिया करें ताकि वह स्कूटर पर ही दरयागंज आया करे । मैंने कहा कि इस से सुभाष समय पर पहुँच जाया करेगा और कम्पनी को फायेदा होगा। इस प्रोग्राम के अनुसार स्कूटर में पेट्रोल कम्पनी डलवा दिया करेगी. बस आपकी आज्ञा चाहिए . सुन कर गुरुजी ने भोलेपन से हाँ कह दिया पर एक मिनट के बाद ही मेरी ओर देख कर कहने लगे, ''ओये ! तूने यह प्रोग्राम कहीं मेरा पेट्रोल का खर्च बचाने के लिए तो नहीं किया ?''

मैंने कहा, ''नहीं गुरुजी, इसमें कम्पनी का फायेदा सोचा है मैंने, क्यूंकि सुभाष अक्सर देर से आता है और काम का हर्ज होता है''। सुन कर गुरुजी ने आगे कुछ नहीं कहा. लेकिन उस दिन के बाद एक बात अजीब सी और बहुत ही ख़ास हुई......

गुरुजी उस स्कूटर पर फिर कभी नहीं बैठे. उन्होंने अपना चेतक स्कूटर फिर कभी नहीं चलाया. स्पष्ट है कि गुरुजी ने हम दोनों भाईयों के मन की भावना पड़ ली थी और तब से लेकर आज तक मैं अपने आप में शर्म महसूस करता हूँ. जो संसार को हर रोज़ बचाते हैं ऐसे महागुरु देव को मैं और सुरिंदर तनेजा बचाने चले थे ?

मुझे क्षमा कर दें गुरुजी. आप तो सब को माफ़ करते हैं, हम दोनों को भी माफ़ कर दें साहिब जी !

हम दोनों की आप से प्रार्थना है कि हमारी बुद्धि और मन पर अपना पूर्ण नियंत्रण रखें आप और हमेशा हमेशा के लिए ।

प्रणाम गुरुदेव !

मुक्ता बजाज गुरुजी के सम्मुख

212. *अब मैंने सब आटोमैटिक कर देना है ।*

अब मैंने सब आटोमैटिक कर देना है मैं ऐसा इंतज़ाम कर रहा हूँ कि पब्लिक को किसी से मिलने की जरूरत ही नहीं पड़ेगी। कोई लौंग इलायची बनवाने की जरूरत ही नहीं होगी। आने वाले लोग अपने मन में जो भी सोचेंगे, उनके काम हो जाएंगे।

24 *नवम्बर,* 1990 *की बात है, सेक्टर*-7, *गुड़गांव अपने बेडरूम मैंगुरुजी बैठे थे और मुक्ता उनके चरणों में । उन्होंने कहना शुरु किया।*

''...अब मैंने सब आटोमैटिक कर देना है। मैं ऐसा इंतज़ाम कर रहा हूँ कि पब्लिक को किसी की जरूरत ही नहीं पड़ेगी, कोई लौंग इलायची बनवाने की जरूरत ही नहीं होगी। आने वाले लोग अपने मन में जो भी सोचेंगे, उनके काम हो जायेंगें''। धर्म ग्रंथों में ईश्वर को त्रिकाल दर्शी कहा गया है, यानी जिसे हर काल का ज्ञात हो। भविष्य में क्या होगा ईश्वर को पहले से ही पता होता है। तो फिर क्या कहें गुरुजी महाराज को जिन्होंने इतना समय पहले वह सब बता दिया था जो आज है और हो रहा है।

क्या कहें आपको हे नाथ, त्रिकाल दर्शी, शिव जी या देवो महेश्वरा? हे गुरु देव! आपको नमन ।।

213. गुरुओं के गुरु, गुरुजी के सन्मुख मेरी पत्नी, गुलशन सेखरी की प्रत्यक्ष अवस्था

दीवाना, किसी पागल को नहीं कहते! वो दिमागीतौर पर बिलकुल ठीक होता है। उसे खास जगह और किसी खास माहौल में या फिर किसी खास व्यक्ति के सन्मुख अपने अस्तित्व की, अपने शरीर की और अपने आप की सुध ही नहीं रहती। उसे कोई पता ही नहीं रहता कि उसे कोई देख रहा है या नोट कर रहा है। वो अपनी ही किसी धुन में पूर्ण रूप से खोया हुआ रहता है।
यह अवस्था देखी मैंने अपनी पत्नी गुलशन सेखरी की! जब वो गुरुजी के सन्मुख होती तो उसे याद ही नहीं रहता था

कि वह कौन है। एक मासूम बच्चे की भांति पूर्ण रूप से खो जाती थी। गुरुजी के सामने या गुडगाँव स्थान पर वो भूल जाती थी कि वह एक पत्नी है या चार बच्चो की माँ है। इस अनोखे आलम की ज़िम्मेदार वो खुद नहीं थी। उसके इस आलम का दारूमदार पूर्ण रूप से गुरुजी पर था। वैसे हर कोई गुरुजी के सामने आते ही तकरीबन इस तरह हो ही जाता था लेकिन गुलशन का आलम कोई विशेष ही था। बहुत विशेष गुरुकृपा हो तो ऐसा होता है किसी के साथ।
गुरुजी के पास पहुँचने से पहले वो ''माता'' की अनन्य भक्त हुआ करती थी।

वह दुर्गा माँ की उपासिका थी। बड़े दत्तचित्त भाव से हर रोज कई घंटे दुर्गा चालीसा का पाठ किया करती थी। गुरुजी के पास आने के बाद बीमारी तो दूर हो गयी और साथ ही गुरुभक्ति भी सीमा से पार हो गयी। एक दिन दोपहर को मैं घर आया तो गुलशन मुझे नज़र नहीं आयी। पूछने पर भी पता नहीं चला कि वो कही गयी है। स्थान पर माथा टेकने के बाद मेरी इच्छा बाहर घास पर बैठने की हुई। दरवाज़ा खोल कर मैंने बाहर देखा तो दंग रह गया। जिस माता की पुस्तक को कई सालों से श्रद्धा से पढ़ा करती थी उसके पन्ने फाड़ फाड़ कर जला रही थी और मुंह से बार-बार उच्चारण कर रही थी ''ऊँ स्वाहा''

मैंने अचरज से पूछा, ''यह क्या कर रही हो गुलशन?''

मेरी तरफ देख कर बड़े ही सरल भाव से कहने लगी, ''बस, काम हो गया''।

मैं समझ गया! उसका अर्थ शायद यह था कि उसकी भक्ति पूर्ण हो गयी।

ऐसे गुरुओं के गुरु की प्राप्ति होने के बाद, अब क्या शेष बचा है प्राप्त करने के लिए।

इस तरह के भाव किसी विरले को ही नसीब होते हैं। गुरु की असीम कृपा का यह विशेष उपहार है, वरदान है। आप महानतम--महान हैं गुरु देव।

आपको कोटी कोटी प्रणाम साहिब ।

214. गुरूजी की शिवरात्रि

संसार में महा शिवरात्रि की प्रतीक्षा सभी शिव भक्तों को होती है, मगर गुरूजी के भक्तों में यह इंतज़ार दीवाली की रात से ही प्रारंभ हो जाता है।
हमारे गुरुजी के ज्ञान भंडार के अनुसार दीवाली की रात भगवान् शिव - देवो महेश्वरा समाधि अवस्था में प्रवेश कर जाते हैं और शिवरात्रि की रात 12 बजे जागृत अवस्था में वापिस आते हैं। इन बीच के दिनों में सभी शिष्यों को शिव मन्त्रों के प्रयोग के साथ सेवा करने की अनुमति नहीं है। भगवान् शिव के मन्त्रों का उच्चारण भी वर्जित होता है, सेवा

करने की अनुमति तो है लेकिन शक्ति के मंत्र शक्तियों के प्रयोग के साथ।

शिवरात्रि से एक दिन पहले की रात को शिष्य तथा कुछ चुने हुए गुरुभक्त सेवादार स्थान की सफाई करते हैं। स्थान और स्थान पर सुसज्जित सभी ईश्वर के रूपों को बड़ी श्रधा से साफ़ किया जाता है और फूलों से सजाया जाता है। सारे स्थान को भी फूलों से पूर्ण रूप से सजाया जाता है। गुड़गाँव स्थान पर महा शिवरात्रि का ये दिन एक पर्व की तरह नहीं अपितु एक महा यज्ञ जैसा प्रतीत होता है। देश-विदेश से हज़ारों की संख्या में गुरूजी के भक्त, शिवरात्रि से कुछ दिन पहले गुड़गाँव स्थान पर महाशिवरात्रि से कुछ दिन पहले ही गुड़गाँव पहुँच जाते हैं! उन सब के लिए बिस्तर, रहने और खाने की व्यवस्था बड़े ही सुचारु रूप से की जाती है। सैंकड़ों सेवादार गुरुभक्त इस कार्य में दिन रात व्यस्त रहते हैं। दिन और रात का खाना यानी लंगर इस अदाज़ से बनाया और परोसा जाता है, मनो सब के सब “वी आयी पी” हों ।

गुरुजी और उनके शिष्य तथा सभी भक्तजन प्रातःकाल 3 से 4 बजे जाग कर, स्नान आदि करके पानी पीते हैं। उसके बाद चाय का प्रसाद लेते हैं. इसके उपरान्त माता जी ज्योत जलाती हैं और अब शुरु होता है शिवरात्रि का व्रत ... इस व्रत में सारा दिन कुछ खाना या पीना नहीं होता। रात को 12 बजे सब को शिवरात्रि का जल दिया जाता है और उसके बाद आलू का प्रसाद दिया जाता है। आलू के साथ चाय का प्रसाद मिलता है जिसमें दूध के स्थान परं नीम्बू का रस

मिलाया जाता है। इस चाय में मीठा, नमक और काली मिर्च से युक्त मसाला डाला जाता है।
यह चाय सारे संसार में एक अनोखी और अद्भुत चाय है। सिर्फ गुरूजी ही बना सकते हैं, अन्य कोई नहीं। उबलते हुए पानी में गुरूजी अपने हाथ डालते हैं--तीन बार और फिर उसमें पत्ती वगैरह और अन्य चीज़े मिलाई जाती हैं। इस चाय का स्वाद संसार की किसी भी चाय से पूर्णतया भिन्न होता है। यह एक अमृत है। सब गुरुभक्त और शिवभक्त इस प्रसाद का इंतज़ार करते हैं पूरा वर्ष।
शिवरात्रि का जल एक खास तरह का अमृत है। पूरे संसार में यह जल सिर्फ गुरुजी ही बनाते हैं। अपने जीवन काल में मैंने कहीं भी इस तरह का जल नहीं देखा और न ही कभी कहीं पिया।

प्रातः काल गुरुजी अपने हाथ हर ड्रम में डालते हैं।
फिर गुरूजी अपने हाथ से छूकर केसर डालते हैं।
फिर काली मिर्च, इलाइची, लौंग, बेल पत्र, तथा अन्य कई वस्तुएं डालते हैं फिर अपने 11 शिष्यों को बुलाते हैं और उनसे भी ये ही क्रिया कराते हैं। प्रातः काल से रात 11 बजे तक गुरुजी पहरों के हिसाब से कई बार इस काली मिर्च, लौंग, इलायची व केसर डालने की क्रिया को दोहराते हैं।
गुरुजी सुबह से रात 11 बजे तक अपने सारे शिष्यों को साथ लेकर हज़ारों भक्तों को आशीर्वाद देते रहते हैं और साथ जल के ड्रमों में अपनी - ईश्वरीय शक्तियां मिलाते रहते हैं। लोगों की भीड़ का अनुमान लगाना कठिन ही नहीं अपितु असंभव सा लगता है। अनगिनत लोगों की इस भीड़ में एक भी ऐसा नहीं मिलता, जो यह कह दे कि गुरुजी ने उसके

सर पर हाथ नहीं रखा। सब प्रसन्न और गद-गद हो कर आगे बढ़ते जाते हैं, रात के प्रसाद की प्रतीक्षा और उसे ग्रहण करने के लिए।

यह जल "शिवरात्रि का जल" के नाम से जाना जाता है। लम्बी बीमारियों और दुखों से सताए हुए लोग जब शिवरात्रि का जल, लौंग इलाईची के साथ खा लेते हैं तो वे पूर्णतया सारे दुखों से स्वस्थ और रोग मुक्त हो जाते है।

यही है चमत्कार इस जल का। रोग कोई भी क्यों न हो, शारीरिक या मानसिक, या फिर कोई प्रेत रोग हो, इस जल से सभी दुखों से छुटकारा मिल जाता है। मगर विश्वास में कमी, फायदे के रास्ते में आ सकती है, तंत्र विद्या का दुरुपयोग या जादू टोना के प्रभाव को शिवरात्रि के जल से छींटा मारने से दुष्प्रभाव हट जाता है और लोग सुख की सांस लेते हैं। हज़ारों उद्धारण मिलेंगे जिनके कारण आपके मन में गुरुजी के चरणों में विश्वास और अपार श्रद्धा उत्पन्न होगी। इस विश्वास के सहारे ही आप गुरुजी की कृपा के पात्र बन सकेंगे जो सांस लेने से भी अधिक आवश्यक है। पाठक पूर्ण सावधान रहें, बिना विश्वास के मंजिल का मिलना मुश्किल ही नहीं अपितु असंभव है।

इस जल का वितरण होता है शिवरात्रि के अगले दिन! सुबह हज़ारों की संख्या में लोग सेक्टर 10 गुड़गाँव स्थान पर एकत्रित होते हैं। सारे देश से ही नहीं विदेशों से आये हुए लोग भी पहुँच कर हॉल में बैठ कर अपनी बारी की प्रतीक्षा करते हैं। पहले अपनी बोतलों में जल भरवा लेते हैं और फिर शिष्यों के सम्मुख अपनी तकलीफ बतलाकर जल में

लौंग, इलायची डलवाते हैं। सेवन की विधि पूछकर चले जाते हैं और अपने भाग्य की सरहाना करते हैं... धन्य हैं गुरूदेव आप किसी का नाम अथवा पता पूछे बगैर पूरा स्वर्ग उनके नाम कर देते हैं।

साहिब जी आप इस ऊँचे दर्जे की भलाई के बदले किसी से कुछ भी नहीं लेते सिर्फ देते ही देते-देते हैं--- यह है आपका असली स्वरूप मेरे महाराज, मेरे मालिक!

आपको कोटि-कोटि प्रणाम, गुरुदेव।

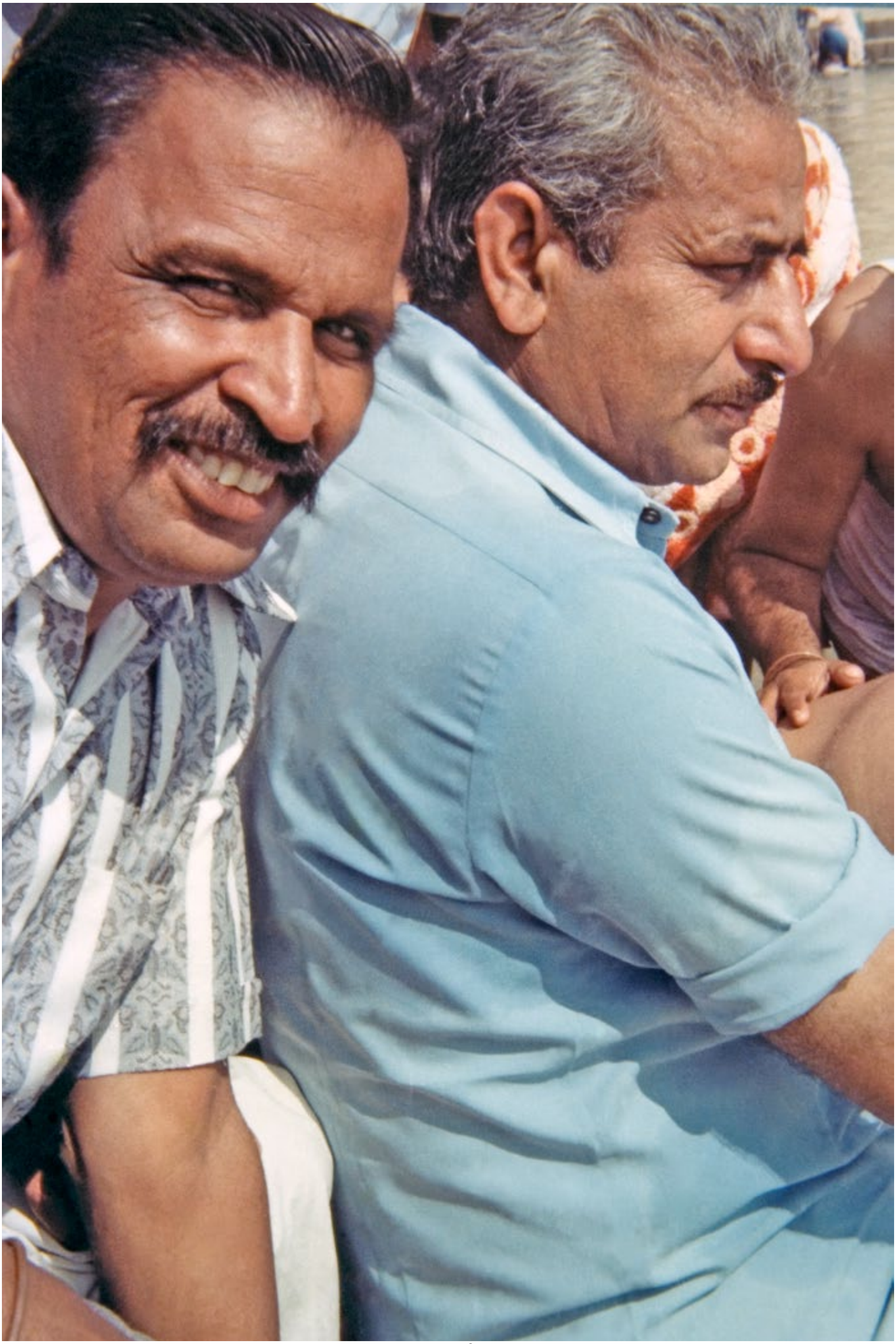

215. भानु के पिता डी एस जैन को आधी रात के समय ज़ोर की खांसी और उसी समय गुरुजी प्रकट हो गए।

शिवरात्रि के अगले दिन जब हॉल में शिवरात्रि का जल, लौंग और इलायची बांटी जा रही थी। सेवा के ऐसे समय हाल में चारों तरफ गुरुशिष्य कुर्सियों पर बैठे थे सैंकड़ों "भक्तजन" सामने कारपेट पर बैठे अपनी अपनी बोतलों में लौंग- इलायची डलवा रहे थे। शिवरात्रि का जल-हॉल में एक तरफ आसन था और कुछ शिष्य इस महान सेवा में संलग्न थे, लोग खाली बोतलें आगे करते और शिष्य उन्हें जल से भरते जा रहे थे। जल लेने के बाद भक्तजन दूसरे शिष्यों के सन्मुख बैठ कर लौंग इलाइची लेते जा रहे थे। शिष्यों में

सर्वश्री ऍफ़ सी शर्मा, संतलाल, डीएस जैन तथा कई अन्य, सामने बैठे लोगों को जल और लौंग - इलाइची की सेवन विधि समझा रहे थे। मेरे साथ महाराज क्रिशन, तिवाड़ी, देवैंद्र जैन, सन्नी (प्रदीप सेठी मुंबई) तथा भानु जैन कुर्सिओं पर थे अतः जल और ज्ञान बाँट रहे थे।

भानु ने कहना शुरू किया :- शनिवार आधी रात के समय, पापा (डी एस जैर्न) को जोर की खांसी लगी आवाज़ इतनी ऊँची थी कि मम्मी की नींद खुल गयी। नींद से पूरी तरह से बाहर आने के लिए मम्मी प्रयत्न करने लगी। जैसे ही उनकी आँख पूरी खुली तो दंग रह गयी। मम्मी ने देखा कि गुरुजी पापा के गले पर ऊपर से नीचे हाथ से सहला रहे हैं और बड़े ही प्यार से कहते जा रहे हैं, सो जा बेटा - सो जा- और पापा गहरी नींद में सो रहे थे। बहुत ही आनंद दायक दृश्य था, मम्मी ने कहा, "हालांकि मैं पूरी तरह से जागी नहीं थी और जब जाग गयी तो गुरुजी अदृश्य हो चुके थे"।

अब क्या कहें कि गुरुजी कौन हैं। क्या वे सर्वव्यापी ईश्वर हैं जो हर जगह पर और हमेशा विद्यमान रहते हैं? साथ में सोई हुई पत्नी की नींद तो बाद में खुली और वे पहले ही पहुँच गए दुः ख की घड़ी में और गले को सहला कर पापा को फिर से सुला दिया।

धन्य हैं गुरुदेव आप -- आफरीन प्रभो आफरीन!

216. पुरानी सुस्मृतियाँ -- गुरूजी के साथ 1976

सुबह - यानी प्रातः काल कोई परिचय नहीं चाहिए इस शब्द के लिए सभी सुबह उठते हैं और अपने-अपने कामों में जुट जाते हैं। पक्षी दाना चुनने और पशु अपने आहार के लिए। हर मनुष्य जागता है तो किसी न किसी प्रोग्राम के साथ अपना दिन शुरू करता है। किसी को फेक्ट्री या किसी को आफिस। किसी को किसी बिजनेस मीटिंग में और किसी को कोई पेमेंट लेने के लिए नाश्ता छोड़ कर भागना पड़ता है। कोई मंदिर या कोई गुरू द्वारे जाता है मालिक से प्रार्थना करने. --- भाव यह कि हर कोई सुबह उठते ही किसी न किसी कार्य के साथ जुड़ा हुआ ही दिन शुरू करता है। इसमें एक बात स्पष्ट और खास है वो यह कि सब के सब अपने

निजी कामों में व्यस्त हैं, क्या पशु और क्या इंसान।
लेकिन, गुरुजी अपना दिन कैसे शुरू करते हैं -- उठते ही ध्यान में चले जाते हैं, लोगों के लिए अपनी ईश्वरीय शक्तियों का प्रयोग कर उन के दुखों का निवारण शुरू कर देते हैं। जो कल आए थे या जो कल से पहले आये थे उन सब का ध्यान करते हैं। अपने निजी जीवन का नहीं। उठते ही सार्वजनिक कल्याण कार्य में संलग्न हो जाते हैं - वाह क्या अंतर है संसार के जीवों और गुरूजी के मध्य! कोई निजी कार्य कतई नहीं। सब लोगों की भलाई के लिए।
बहुत साल पहले जब मैं नया नया गुरूजी के चरणों में पहुँचा ही था और देखता था कि प्रतिदिन लोंगों को अपना इतना समय देकर उनके दुख और बीमारिया दूर करते रहते हैं तो मन में यह सवाल उठा थौं, कारण जानने की जिज्ञासा उत्पन्न हुई थी कि ऐसा क्यों कर रहे हैं । तब गुरु जी ने मुझे निम्नलिखित ज्ञान दिया था उत्तर के रूप में: -
"बेटा, यह लोग जो अपनी तकलीफे ठीक कराने मेरे पास आए हैं। यह सब भगवान ही हैं जो आत्मा के रूप में इनके अंदर रहता है उसी के कारण यह चलते फिरते हैं। जैसे ही वो बाहर निकला, यह मिट्टी हो जाएंगे। मैं इनके शरीरों के अंदर बैठी इनकी आत्माओं यानी भगवान से संपर्क करता हूँ और फिर माँगने पर दे देता हूँ। मैंने ही इसे सेवा का नाम दिया है। गुरु होने के कारण मैं पूर्ण रूप से सक्षम हूँ। "क्षमा करना मेरे अधिकार क्षेत्र में है?" मैंने कहा, "लेकिन गुरूजी, अगर कोई किसी को दुःख देता है तो उसके उस पाप की भी सजा नहीं मिलनी चाहिए ?" उसे कहने लगे, "कर्मों के अधीन फल, यदि सजा है तो वो काम भगवान् का है, मेरा नहीं, मेरा काम सजा देना नहीं, क्षमा करना है, क्योंकि मैं गुरु हूँ! उनका ध्यान में जाना,- मतलब कि वे उस जगह पहुँच गए हैं।
हे गुरुदेव, आपका रूप तो सर्वव्यापी कहलाया जाता है और ईश्वर को भी यही (सर्वव्यापी) कहा जाता है। बारंबार प्रणाम हैं, गुरुवर।

217. गुरुजी की फिएट कार में आगे गुरुजी थे और पीछे की सीट पर अजय और रीटा।

मेरी बड़ी बहन के बेटे अजय की शादी फरीदाबाद में थी और गुरुजी ने मुझे खासतौर पर फेरे होने तक वहाँ रहने के लिए भेजा। खाना समाप्त होने पर दोनों परिवार मण्डप में बैठ गए और फेरो की रसम शुरू हो गई। मैंने सोचा कि गुरुजी के आदेशानुसार मेरा काम समाप्त हो चुका है। अतः मैं वहाँ से निकला और अपने घर पंजाबी बाग आ गया।

लेकिन फेरों के पश्चात एक अजीब घटना घटी।

अजय ने सिंधुर की डिब्बी उठाई और दुल्हन की मांग में भर

दी। हिन्दु विवाह में सिंदूर की रस्म विवाह को पूण करती है। इसके उपरान्त वधु के परिवार से विदाई ले कर बहू को अपने घर लाना था। जैसे ही चलने की तैयारी कर रहे थे कि अजय ने कांपना शुरू कर दिया और धरती पर गिर गया। ऐसा लगा जैसे मिर्गी का दौरा पड़ा हो। देख कर सब लोग भौचक्के रह गए और एक दूसरे की ओर ताकने लगे। कन्या पक्ष की दशा ऐसी थी कि उन्होंने लड़की को भेजने से इनकार कर दिया और अजय और उसके परिवार को बिना दुल्हन के वापिस आना पड़ा। अत्यंत दुःख छा गया वर पक्ष में। वहाँ से निकल कर सब हमारे घर पंजाबी बाग आ गए। जहाँ मेरे माता-पिता एवं भाई रहते हैं। सब ने सलाह मशवरा किया लेकिन कोई हल नज़र नहीं आया और अजय का जीवन अंधकारमय लगने लगा। तत्पश्चात दोनों परिवारों में बैठकर निर्णय लिया कि बिना कानूनी कार्यवाही के अलग हो जाना ठीक है।

लेकिन मेरी बहन और माँ से यह सब सहन नहीं हुआ और जुदाई का निर्णय उन्हें मान्य नहीं था। उन्होंने फैंसला किया गुरुजी के पास जाएंगे और अजय के लिए उसकी दुल्हन की मांग करेंगे। उन्होंने ऐसा ही किया और गुरूजी से भरपूर प्रार्थना की। अजय बहुत उदास रहने लगा और गुरूजी से आशीर्वाद हेतु आए दिन गुड़गांव जाने लगा और गुरूजी से अपनी शादी को बहाल करने के लिए प्रार्थना करता रहा। एक दिन जैसे ही उसने प्रार्थना की, गुरूजी नरम पड़ गए। उन्होंने पूछा कि क्या उसके पास रीटा से सम्बन्धित कोई चीज़ है तो अजय ने कुछ सोचने के बाद कहा कि हाँ गुरूजी, एक अटेची की चाबी है पर अटेची रीटा के पास, गुरू जी मुस्कुराए और कहने लगे, रीटा के आफिस जाओ और चाबी उसे दे आओ। उसे अटैची खोलने के लिए इसकी आवश्यकता

होगी। रीटा बैंक में काम करती थी। अतः अजय उसे मिलने हेतु वहाँ चला गया और रीटा उसे मिलना नहीं चाहती थी। गुरु जी का आदेश था इसलिए उसने कहा उसे कोई बात नहीं करनी है। सिर्फ उसके अटैची की चाबी लोटानी है ताकि वो उसे खोलने में सक्षम हो सके। सुनकर वो कुछ नरम पड़ गई और उसे चाय पीने के लिए कहा। दोनों ने मिलकर चाय पी। जाहिर है कि बातों का सिलसिला शुरु हो गया।

अजय और रीटा दोबारा मिले और फिर उनका मिलना लगातार जारी रहा। एक दिन मैं अपने आफिस में बैठा था कि एक फोन आया आवाज अजय की थी। उसने कहा कि रीटा उसके साथ है और गुरुजी से आशीर्वाद लेना चाहती है कि हम दोनों पति-पत्नी का जीवन जीए।

सुनकर विश्वास नहीं हुआ मैं भागा और इस आश्चार्यजनक बात को सुनाने के लिए गुरु जी के आफिस पहुँच गया।

सुनकर गुरु जी मुस्कुराए और बच्चों के लिए कुछ हिदायतें दी। आज्ञानुसार मैंने अजय को गोल मार्किट, विमला बहन जी के स्थान पर गुरु जी की प्रतीक्षा करने को कह दिया। इतने में गुरु जी भी अपने कुछ शिष्यों को और मुझे लेकर वहाँ पहुँच गए।

रीटा और अजय दोनों पहुँच गए और गुरुजी से आशीर्वाद लेकर बैठ गए। अजय के परिवार के कुछ सदस्य भी पहुँच गए। लेकिन रीटा के परिवार से कोई नहीं आया। उनको इनका दोबारा मिलन पसंद नहीं था। रीटा के अनुसार, उसने अपने परिवार को मनाने का प्रयत्न किया था लेकिन सफल नहीं हो पाई। तदुपरांत उसने अपनी माँ और मामा को कह दिया कि अजय उसका पति है अतः आज वो आफिस से घर न आकर अजय के साथ उसके घर चली जाएगी। उसने

उसे सुबह कहा था कि बंगला साहिब गुरुद्वारे में उन सब के आशीर्वाद के लिए बड़ी प्रसन्नता के साथ इंतजार करेंगी। जिस पर भी यदि वे नहीं आए तो वे अपने पति, अजय के संग ससुराल चली जाएगी।

लो! अजय और रीता फिर से एक हो गए, लेकिन यह कैसे संभव हुआ, कोई नहीं जानता, सिर्फ गुरुजी जानते हैं।

गुरुजी ने एक आवश्यक फैसला सुनाया कि वर-वधु पहले गुड़गाँवा स्थान पर चलेंगे और वो भी गुरुजी की अपनी कार में वहाँ पर गुरुजी उन्हें खास आशीर्वाद देंगे तत्पश्चात वे दोनों अपने विवाहित जीवन का प्रारंभ करेंगे।

आगे की सीट पर ड्राइवर के साथ गुरुजी विराजमान हो गए। जैसे ही वे आधे रस्ते में पहुँचे गाड़ी का बोनट अचानक खुला और जोर से बड़े शीशे से जा टकराया। ड्राइवर ने घबराकर गाड़ी रोक दी। बोनट दोबारा ठीक से सैट किया और फिर से चलने लगा। चंद मिनट के बाद बोनट फिर खुला और बड़े भयानक ढंग से शीशे से जा टकराया। ड्राइवर ने घबरा कर गाड़ी फिर से रोक दी और असमंजस में गुरुजी की ओर देखने लगा। गुरुजी मुस्कुराए और ड्राइवर को आदेश दिया कि उतर कर बोनट ठीक कर दें और बिना घबराहट के गाड़ी चलाता जाए। सब घबराहट में थे लेकिन गुरुजी बिलकुल शांत थे और मुस्कुरा रहे थे। दो बार ऐसा हुआ मगर गुरुजी को कोई फर्क नहीं पड़ा और आश्चर्य की बात यह थी कि शीशे पर एक भी खरोच नहीं थी। इसके अलावा सबसे आश्चर्य जनक बात यह है जीवन में पहली बार जाना कि गुरुजी खुद किसी की अपनी कार में बिठा कर स्थान पर लेकर गए हो। उस नव-दम्पत्ति को कितनी बड़ी हिफाजत चाहिए थी, यह तो बोनट का दोबार उड़कर शीशे से

टकराना भी साबित करता है, अर्थात गुरूजी को पहले से ही मालूम था कि रास्ते में क्या होने वाला है। मेरी माँ और बहन को आश्वासन नहीं बल्कि वरदान दिया था। उन्होंने उसे पूरा करने हेतु ही यह कदम उठाया।

अजय और रीटा ने सुख से अपना दांपत्य जीवन व्यतीत किया।

NORWAY HOUSE

218. यह क्या करते हो आप बच्चों के साथ? आधी रात को भी हाथ में डंडा लिए रहते हो, क्यूँ गालियाँ दे रहे हो बेचारे को?

ओ 'मास्टर, तू नहीं जानती इन बिगड़ हुओं को, आधी रात को भी बच्ची को चूमा चाटी कर रहा है।
गुरुजी ने फोन पर, रात 12 बजे मुझे भरपूर डांट लगाई। रात के 12 बजे होंगे और मैं सोने की तैयारी कर रहा था। अपने कमरे की तरफ जाते हुए रास्ते में बच्चों का कमरा था। मैंने चारू को सोते हुए देखा, चादर नहीं ओढ़ रखी थी उसने, बहुत छोटी थी वह तब। मैंने चादर उसके ऊपर कर दी लेकिन मेरा ध्यान उसके मासूम चेहरे की ओर गया तो उसके आकर्षण से मैं भावुक हो गया। जैसे ही मैंने उसे चूमा, फोन की घंटी बजी, फोन पर डांट और गालियों की

बौछार थी। "ओये -- यह क्या कर रहा है अपनी माँ के साथ आधी रात को?" यह आवाज़ थी गुरुजी, मैं घबरा गया पर इतने में मुझे माता जी की आवाज़ सुनायी दी, वे कह रही थी, "यह क्या करते हो आप बच्चों के साथ? आधी रात को हाथ में डंडा लिए रहते हो, क्यूँ गालियाँ दे रहे हो बेचारे को? उधर से गुरुजी की आवाज़ आयी, "ओ' मास्टर तू नहीं जानती इन बिगड़े हुओं को, आधी रात को भी बच्ची को चूमा चूमा चाटी कर रहा है यह ???? दा खसम! गुरुजी की खास गाली मोह में डूबा हुई है"

दिमाग सुन्न हो गया मेरा, सोचने लगा, इनको कैसे पता चला कि मैं क्या कर रहा हूँ। यह तो गुड़गाँव अपने पलंग पर माता जी के संग बैठे हैं वहाँ, वहीं से मुझे पंजाबी बाग, मेरे घर में मेरी सारी गति-विधियाँ देख रहे हैं?

इनका पार पाना तो मेरे बस में नहीं, ऐसा तो सिर्फ भगवान ही कर सकते हैं।

ऐसे ईश्वरतुल्य गुरुओं के गुरु, मेरे गुरुजी, कोटि-कोटि प्रणाम स्वीकार कीजिए। अपनी कृपा सदैव बनाए रखना साहिब।

219. आगे बढ़ो और यह सेवा जारी रखो, मै सब सम्हाल लूँगा।

1970 के दशक की बात है, जब गिरि पूंजे गुरुजी के दर्शनों के लिए गुड़गाँव पहुँचे। वहाँ रहने के दौरान उन्होंने गुरुजी से अपने मोहल्ले के लोगों के उनके प्रति अपमानजनक व्यवहार की शिकायत की।

उन्होंने कहा, "गुरुजी, जिस दिन से आपने मेरे घर पर स्थान बनाया, उसी दिन से आपके आदेशानुसार मैं वहाँ आपकी दी हुई शक्तियों से लोगों की सेवा कर रहा हूँ। जैसे. जैसे लोगों का भला हो रहा है, वैसे.वैसे वहाँ लोगों की भीड़

भी बढ़ती जा रही है। यही आपकी कृपा है, हे गुरुदेव।

परंतु अचानक कुछ ऐसा हो गया, जो मेरी समझ से बाहर है। मेरे पड़ोस के लोगों का एक समूह स्थान पर आया और मेरी सेवा पर अपनी आपत्ति व्यक्त करने लगा। मैंने उनसे कारण जानने की बहुत कोशिश की, पर उन्होंने कुछ स्पष्ट नहीं कहा। फिर भी वे अपनी बात पर अटल हैं और मेरी सेवा बंद करवाना चाहते हैं।

अपने शांत स्वभाव को बनाए रखते हुए मैंने उन्हें बहुत समझाने का प्रयास किया कि यह सब मेरा भक्ति भाव है, कोई व्यवसाय नहीं। मैंने उनसे यह भी कहा कि इस सेवा से सबका भला हो रहा है, किसी का नुकसान नहीं। इसलिए मैं इस सेवा को बंद नहीं करूँगा। कुछ दिनों बाद वे लोग मेरे घर के बाहर बैनर लेकर इकट्ठा हो गए और मेरे खिलाफ नारे लगाने लगे। मेरे परिवार ने भी मुझे उन्हें उसी प्रकार उत्तर देने के लिए कहा, किन्तु मैंने मना कर दिया। मैंने कहा कि जब मैं कुछ गलत नहीं कर रहा, तो मुझे स्वयं को उचित ठहराने की कोई आवश्यकता नहीं है। अंत में मैंने उन्हें चेतावनी दी कि वे जो चाहे करें, पर मैं यह सेवा किसी भी परिस्थिति में बंद नहीं करूँगा। हे गुरुदेव, मुझे इस परिस्थिति से बचा लीजिए। मैं यह सब अकेले नहीं संभाल सकता। इसी प्रार्थना के साथ मैं आपके पास आया हूँ।"

गुरुजी ने यह सब सुना और बड़ी सादगी से कहा, "आगे बढ़ो और यह सेवा जारी रखो। मैं सब संभाल लूँगा।"
संयोगवश उसी समय कोई व्यक्ति गुरुजी की एक बड़ी तस्वीर उनके अनुमोदन के लिए वहाँ लेकर आया। उनमें से एक तस्वीर गिरि पूंजे के हाथ में देते हुए उसने कहा, "ले भाई,

जा गुरु नूं लै के।"
इस प्रकार नागपुर पहुँचने के बाद गिरि पूंजे ने पुनः सेवा आरंभ की, परंतु इस बार पूर्ण आत्मविश्वास के साथ। गिरि पूंजे रिज़र्व बैंक ऑफ इंडिया में प्रबंधक के पद पर कार्यरत थे। कुछ दिनों बाद उनके पड़ोसियों ने उनके कार्यालय में जाकर उनकी शिकायत कर दी। उन्हें एक शो.कॉज़ नोटिस भी मिला। उसके उत्तर में उन्होंने लिखा कि वे जो भी कर रहे हैं, वह पूर्णतः वैध है और इससे उनके कार्यालय संबंधी कार्यों में किसी प्रकार की बाधा नहीं आती।

फिर भी पूछताछ अधिकारी संतुष्ट नहीं हुआ और उसने उन्हें यह सेवा बंद करने के लिए कहा पर इस बार भी गिरि पूंजे नहीं माने।

अंततः सारी रिपोर्टें मुंबई हेड ऑफिस भेज दी गईं। कुछ समय बाद वहाँ से एक अधिकारी इस मामले की जाँच के लिए आया। वह यह समझना चाहता था कि गिरि पूंजे जो कह रहे हैं, वह वास्तव में सत्य है या नहीं।

गिरि पूंजे ने उसे विस्तारपूर्वक बताया कि वे जल, लौंग, इलायची आदि किस प्रकार तैयार करते हैं, जिनसे लोगों का भला होता है। सारी जानकारी प्राप्त करने के बाद अधिकारी ने पूछा, "क्या तुम मेरे बारे में भी कुछ बता सकते हो?"

इस पर गिरि पूंजे ने गुरुजी का ध्यान करते हुए कहा, "पि. छले पाँच वर्षों से तुम पेट दर्द से परेशान हो।"
यह सुनकर अधिकारी आश्चर्यचकित रह गया। उसने गिरि पूंजे से उस दर्द को ठीक करने का अनुरोध किया। गिरि पूंजे ने उसके पेट पर हाथ रखकर हल्का सा दबाव दिया और

कहा, “अब जाँच कर लो, दर्द समाप्त हो चुका है।”
अधिकारी चकित रह गया, क्योंकि उसका पेट दर्द वास्तव में ठीक हो चुका था। उसने गिरि पूंजे की ओर श्रद्धा और सम्मान से भरी दृष्टि से देखा और बाद में कार्यालय में उनके पक्ष में एक सकारात्मक रिपोर्ट प्रस्तुत कर दी।

उस दिन के बाद गिरि पूंजे को फिर कभी ऐसी परेशानी का सामना नहीं करना पड़ा और वे अपने भक्ति भाव से लोगों की सेवा करते रहे।
कुछ वर्ष पहले गिरि पूंजे ने अपना शरीर त्याग दिया और गुरुजी के चरणों में विलीन हो गए। किंतु आज भी उनके स्थान पर उनका एक अनुयायी, उनके परिवार की सहायता से, सेवा कार्य जारी रखे हुए है।

यही है गुरुजी की कृपा और उनका सर्वव्यापी स्वरूप, जो उन्हें ब्रह्मांड का स्वामी सिद्ध करता है।

220. गुरूजी कहने लगे, "तो तू अपने गुरू से ज्यादा अपने चपड़ासी पर विश्वास करता है।

गुरूजी कहने लगे, "तो तू अपने गुरू से ज्यादा अपने चपड़ासी पर विश्वास करता है। इस घटना का सम्बन्ध गुरुजी के शिष्य डाक्टर शंकर नारायण से है। उन दिनों गुरुजी उसी आफिस में सीनियर साइंटिस्ट के ओहदे पर थे जिसमे शंकर नारायण ऊँचे पद पर नियुक्त थे लेकिन गुरू और शिष्य का रिश्ता तो आफिस में भी कायम था।

एक समय डिपार्टमेंट में प्रमोशन का समय आया तो वह गुरुजी के पास आया और प्रार्थना करने लगा कि इस बार उसकी प्रमोशन अवश्य होनी चाहिए, गुरूजी ने आशीर्वाद दे

दिया और कहा "बेफिक्र रहो, हो जाएगी।"
समय आ गया पर उनको लिस्ट में अपना नाम नज़र नहीं आया। मन बहुत दुखी हुआ और परेशानी के आलम में दफ्तर से निकल कर घर चल दिए। प्रतिदिन की भाँति घर जाने से पहले गुरु जी से आशीर्वाद भी नहीं लिया। घर जाकर पत्नी से शिकायत भरे अंदाज में अपने साथ हुई ज्यादती के बारे में चर्चा करने लगा। इधर उन्हें आफिस में ना पाकर गुरूजी सीधे उनके घर चले गए। बहुत प्यार करते थे गुरूजी उन्हें।
मैं अपने भाग्य की सराहना करता हूँ। गुरूजी स्वयं मुझे सारा वाक्या सुना रहे थे। बड़े अच्छे मूड में लग रहे थे। वे संसार के इतने बड़े गुरु और मैं इतना छोटा सा उनका शिष्य उनके मुख से सारा वृतांत सुन रहा था और आनन्द ले रहा था।
उन्होंने कहा,"रज्जे मैंने द्वार खट्खटाया तो शंकर नारायण ने दरवाजा खोला बिलकुल खुश नहीं हुआ"।
मैं मुस्कुराया और सोचने लगा कि आज तो चाय नहीं मिलने वाली।
"खैर, मैं अंदर आया और सोफ़े पर बैठ गया। फिर उसकी नाराज़गी का कारण पूछने लगा। यह सुनते ही वह फट पड़ा और कहने लगा – 'मैंने देख लिया है, आज मेरे दफ़्तर और भगवान में कोई अंतर नहीं है, सताने के लिए दोनों एक जैसे है।'
फिर वह कहने लगा, 'आपने तो कहा था कि मेरी प्रमोशन हो जाएगी। कहने लगा क्या उस सूची में मेरा नाम है भी या नहीं?'"
मुझे यह सब बताते समय गुरूजी का मूड बड़ा ही लुभावना था। मुस्कुराते हुए आगे कहने लगे,"रज्जे मैंने उसकी आँखों

में देखा और कहा,"बेटा यह कैसे हो सकता है। मैं जानता हूँ कि मैंने तुम्हारा काम कर दिया है। क्या तूने लिस्ट को अपनी आँखों से देखा है?

डॉक्टर ने जवाब दिया, "नहीं मैंने आदमी भेजा था। खबर लाने के लिए और उसने बताया कि मेरी प्रोमोशन नहीं हुई। मैंने कहा तो तुझे मेरे से ज्यादा अपने आदमी पर विश्वास है। दिखा मुझे लिस्ट। उसने कहा कि उसके पास नहीं है। और उसने लिस्ट मंगवाकर गुरु जी के हाथ में दे दी। गुरुजी ने लिस्ट को पड़ा और कहा "यह रहा तुम्हारा नाम"।

हो चुकी है तुम्हारी प्रोमोशन। वैसे ही हुआ है जैसा मैंने कहा था।

अब तो डॉक्टर चुप था। सोचने लगा कि यह कैसे हुआ। मेरी सूचना के अनुसार मेरा नाम लिस्ट में बिल्कुल नहीं था। फिर कहाँ से आ गया। लेकिन गुरुजी उसे डांट रहे थे कि उसने अपने आदमी पर विश्वास किया अपने गुरु पर नहीं। गुरु भक्ति में यह अनिवार्य है कि गुरु के शब्दों पर बिना किसी टिप्पणी के, अटूट विश्वास को,बिना बुद्धि प्रयोग के स्थिर रखा जाए।

भूत- भविष्य और वर्तमान के पूर्ण ज्ञाता गुरुदेव आपको कोटि-कोटि प्रणाम-अपनी कृपा हमेशा बनाए रखना साहिब।

221. गुरुजी ने आशा सेखरी से पूछा, “तेरा पति टूअर से वापिस आ गया है तो कितने चैक साथ लाया है?”

गुरुजी ने आशा सेखरी से पूछा, “तेरा पति टूअर से वापिस आ गया है तो कितने चैक साथ लाया है?” आशा ने खुशी से कहा, “करीब तीन लाख रूपए के गुरु जी!” आज से 30 वर्ष पहले तीन लाख की रमक खासी बड़ी रकम होती थी। गुरुजी ने कहा,“दिखा मुझे” ।

आशा ने पर्स में से सारे चैक निकाल कर गुरुजी को पकड़ा दिए और उम्मीद करने लगी कि अभी आशीर्वाद के साथ वापिस मिल जाएंगे लेकिन गुरुजी ने वापिस देने के बजाए सारे के सारे चैक अपने बिस्तर पर गद्दे के नीचे रख दिए।

इसके बाद गुरूजी दूसरे लोगों से मिलने लगे। आशा सोच में पड़ गई कि अब क्या करें। माँग सकती नहीं और ऊपर से 7 तारीख पास आ रही थी। फैक्ट्री में तनखा बांटनी है, सोचा था आशीर्वाद लेकर बैंक में जमा कर दूँगी पर अब क्या हो सकता था। कुछ देर रूकने के बाद वह वापिस दिल्ली आ गई।

थोड़े दिनों बाद उसके बैंक मैनेजर का फोन आया कि कोई उनकी कम्पनी का चैक ले कर आया है लेकिन उनके खाते में पैसे कम हैं। कृपया या तो बैंक में जमा कराएं या फिर चैक वापिस कर दिया जाएगा। सुन कर आशा का पति गोविंदर पाल मेरा छोटा भाई अचम्भे में पड़ गया। क्योंकि उसने तो किसी को चैक दे कर नहीं भेजा था। उसने फौरन पेमैंट रोकने के लिए सूचित किया और बैंक पहुँच गया। पता चला कि किसी ने उसकी चैकबुक से कुछ चैक धौखे से निकाल कर झूठे हस्ताक्षर किए और बैंक जा कर पैसे निकालने की कोशिश की। अगर कहीं बैंक में वो चैक जमा कर दिए होते जो गुरू जी ने वापस नहीं दिए थे तो आज पूरे तीन लाख का नुकसान हो जाता।

कितने आश्चर्य की बात है कि भगवान की तरह, गुरू जी को भी आने वाली घटना का पूरा पता था और इसी लिए उनके सारे चैक अपने पास रख लिए ताकि बैंक में जमा न कराए जा सकें, अगर कहीं चैक बैंक में चले जाते तो सारा कैश निकल गया होता। अपने भक्त को बचाने के लिए यह कुछ भी कर सकते हैं, धन्य है गुरू जी आप!

पूरा पता होता है आपको जी, बिलकुल वैसे ही, जैसे ईश्वर को होता है। लेकिन एक बात जो खास है। "होनी" का पूरा ज्ञान होने के बावजूद ईश्वर होनी को होने देते हैं। लेकिन यह ईश्वर जिसे हम "गुरूजी" कहते हैं, होनी को होने तो देते हैं लेकिन दुख नहीं होने देते। यानि चैक चोरी

हुए -- यह "होनी" थी। चोर बैंक में चैक कैश कराने गया, --- यह "होनी" बैंक में पैसा होता ता होनी अपना काम कर जाती और चोर अतीन लाख ले जाता। लेकिन यह कैसा ईश्वर है, जिसे गुरुजी कहता हूँ? इन्होंने ज़बरदस्ती चैक अपने पास रख लिए जिसकी कोई उम्मीद ही नहीं थी। यानी होनी को होने भी दिया और दुख से भी बचा लिया अपने भक्त को। वाह मेरे मालिक - मेरे स्वामी --मेरे गुरुजी। कोटि-कोटि प्रणाम साहिब जी!

222. हिमाचल प्रदेश में स्थित, कथोक नामक शहर है जहाँ एक बार गुरूजी का टूअर का प्रोग्राम बना।

हिमाचल प्रदेश में स्थित, कथोक नामक शहर है जहाँ एक बार गुरूजी का टूअर का प्रोग्राम बना। निम्नलिखित घटना सन 1976 की है कथोक पहुँच कर गुरूजी ने अपने शिष्य एफ सी शर्मा जी को सन्देश भेजा कि राजी शर्मा, एस के जैन और मरवाह का लेकर वहाँ पहुँच जाएँ। अतः प्रोग्राम के अनुसार यह सब एक कार में रवाना हो गए।

यात्रा के मध्य जब यह लोग हिमाचल प्रदेश में पहुँचे तो रास्ते में एक मंदिर दिखाई दिया जिसे चिंतपूर्णी माँ कहा जाता है। माता के लाखों भक्त इस मंदिर की यात्रा कर माँ

के दर्शन करते हैं और भक्ति का आनन्द प्राप्त करते हैं कार में चलते-चलते किसी ने कह दिया कि मंदिर रास्ते में ही है, चलो माता चिंतपूर्णी के दर्शन भी करते चलें। विचार तो सुंदर था लेकिन जैनसाहिब के मुख से निकल गया, "यह तो हमारी बेटी है"। इतना कहना ही था कि बस चंद मिनटों में कार बंद हो गई और यात्रा रुक गई। अब क्या करें। रात भर सड़क पर ही रहना होगा। बहुत विचार करने के बाद शर्मा जी ने दो लोगों को बस में भेज दिया ताकि गुरुजी के पास समाचार पहुँच पाए। उनके जाने के कुछ समय बाद कार का बोनट खोला तो देखा कि प्लग निकला हुआ है। अतः प्लग को लगाने से कार स्टार्ट हो गई और यह भी चल दिए और गुरुजी के पास पहुँच गए। चारों लोग एक साथ ही पहुँच गए। गुरुजी ने जैन साहिब को खूब डांट लगाई और कहा, तेरे को यह कहने की क्या जरूरत थी कि यह हमारी बेटी है? फिर उन्होंने ऍफ सी शर्मा जी को कहा, इसने ऐसा कह कर आप सब को भी खराब किया है। यह शक्ति है और मैं शक्तियों के बीच में बैठा हूँ। एक तरफ चामुण्डा हे, दूसरी तरफ कांगड़ा माँ है, उस तरफ ज्वाला माँ है और उस तरफ चिंतपूर्णी माँ है। यह आदरणीय हैं और इनकी पूजा तो सदियों से हो रही है लाखों लोग यहाँ यात्रा कर भक्ति का लाभ उठाते हैं। फिर उन्होंने जैन साहिब को और डांट लगाई। सब लोग पहले तो डर गए और बाद में प्रसन्न हो गए कि जैन साहिब की गलती के कारण ही सही, महा शक्तियों के बारे में ज्ञान तो प्राप्त हुआ और वो भी गुरुजी के मुख से।

223. आज 4 जुलाई, 2012, गुरु पूर्णिमा के बाद का अगला दिन।

आज 4 जुलाई, 2012, गुरु पूर्णिमा के बाद का अगला दिन। मैं गुड़गाँव स्थान के बाहर बगीचे में बैठा गुरु पूर्णिमा के उत्सव और बीते कल की महिमा के बारे में सोच रहा था कि इतने में राजन आया और पास ही बैठ गया।

राजन गुड़गाँव निवासी है स्थान से चंद कदमों पर ही उसका घर है। गुरुजी का बहुत प्रिय भक्त है और अक्सर सुबह शाम उनके दर्शन किया करता और कोई भी सेवा के लिए तत्पर रहता था। गुरुजी की बातें और उनकी कृपाओं का ज़िक्र शुरु हुआ तो उसने एक सुन्दर घटना का वृत्तांत

सुनाया।
राजन कहने लगा,
"रात के करीब 12 बजे थे और मैं गुरुजी के कमरे में था। इतने में एक महिला अपने बच्चे को गोद में लिए शोर मचाती हुई भागी चली आई। बड़ी घबराहट में कहने लगी, "गुरुजी रक्षा कीजिए बच्चा ने लोहे का कील निगल गया है"।
गुरुजी ने बच्चे को गोद में ले लिया और मुझे पानी का गिलास लाने का आदेश दिया। गुरुजी ने पानी अपनी दाहिनी हथेली में डाला और बच्चे के मुख में डाल दिया। जैसे ही पानी गले से नीचे उतरा, बच्चे ने हुक जैसी आवाज की और पानी कील को लेकर बाहर आ गया। महिला दंग रह गई। वह गुरुजी को देखती जा रही थी कि उन्होंने किया क्या? ज़रा सा पानी हाथ में डाला और बच्चे को पिला दिया और बस? इतनी आसानी से कील बाहर आ गया। घर में तो सब ने कहा था कि जल्दी अस्पताल भागा जाए और डाक्टरों के हवाल कर दिया जाए। शायद आपरेशन करना पड़े पर, वाह गुरुजी आपने तो चमत्कार कर दिया।
घोर आश्चर्य --- न जाने कौन सी शक्ति थी जिसने कील उठाया और गले से बाहर उठा फैंका।
गुरुजी ने कील और बच्चा उस महिला के हाथों में दे दिया और कहा, "ले पुत संभाल बच्चा और कील। ऐसे भगवान् जैसे ईश्वर, ऐसे दयानिधान गुरुजी, आप को कोटि-कोटि प्रणाम बड़े से बड़ा खतरा पलक झपकते ही दूर कर देते हैं आप बस मांगने वाले के अंतरतल में पूर्ण विश्वास देखते हैं। साहेब जी आप अपनी कृपा सदैव बनाए रखना सब पर।
प्रणाम साहिब।

224. गुरूजी आए, खड़े हुए और तेल की कड़ाही की तरफ देखने लगे और तेल गरम हो गया पूरियां तलने के लिए।

निम्नलिखित घटना गुरूजी के जन्मस्थान हरियाणा गाँवा, पंजाब की है। घटना का सम्बन्ध एक भव्य लंगर से है जिसका आयोजन वहाँ के एक प्राचीन मंदिर में देवी देवताओं की मूर्ति स्थापना के उपरान्त किया गया था। यह मंदिर गुरूजी के पुश्तैनी मकान के समीप है और यहीं पर गुरूजी ने अपना बचपन भक्ति और साधना में बिताया था। एक दिन इसी मंदिर में बैठे अपने शिष्यों को मंदिर में की हुई भक्ति और साधना का वृत्तांत सुना रहे थे कि संत लाल जी कह उठे, "गुरूजी यह मंदिर तो बड़ा प्रतिभाशाली है और

हमारे लिए तो बहुत ही खास है, अतः आप आज्ञा दें कि इसका सुन्दर तरीके से पुनर्निर्माण किया जाए। इससे यहाँ के लोगों और आप के भक्तों का कल्याण होगा" गुरु जी मान गए और इस आयोजन के लिए एक खास दिन निश्चित कर दिया सौभाग्य से आज वही दिन था।

प्रोग्राम के अनुसार सब शिष्य और भक्तजन एकत्रित हुए और मूर्ति स्थापना का समारोह बड़े भव्य तरीके से आयोजित हुआ। अब बारी आई लंगर की, लकड़ी से जलने वाले बड़े-बड़े चूल्हे बनाए गए और उन पर खाना तैयार होने लगा। एक चूल्हे पर पूरी तलने हेतु बड़ी सी कड़ाही रखी गई लेकिन काफी समय बीत जाने पर भी तेल गरम नहीं हुआ और इस तरह आधा घंटा बीत गया। जब तक पूरी नहीं बनेगी, लंगर शुरु नहीं हो सकता था। तेल का गरम न होना किसी की समझ में नहीं आया और काफी प्रतीक्षा के बाद भी जब नतीजा न निकला तो वह गुरुजी के पास पहुँचे।

उनकी व्यथा सुनने के बाद गुरु जी उठे और रसोई घर में पहुँच कर उस कड़ाही और चूल्हे की आग की और देखने लगे चंद मिनट ही देखा गुरुजी ने कि तेल गर्म हो गया और पूरियाँ तली जाने लगी।

--असंभव --नामुमकिन --- यह कैसे हुआ। अभी तक तो हम सब हारे हुए थे, गुरु जी के आते ही और उनकी नज़र पड़ते ही, पाँच मिनट में जीत गए? वाह! गुरुदेव --गुरुदेव --वाह!!! आफरीन-आफरीन!

यह ईश्वरीय दृश्य वहाँ मंदिर में उपस्थित सैंकड़ोकं लोगों ने देखा और सब के सब भौंचक्के रह गए इस युग के सब से बड़े गुरुजी आप को कोटि-कोटि प्रणाम है मालिकों के मालिक! आप ने क्या किया, यह समझना तो किसी के भी बस में नहीं हाँ! आप समझा दें तो हो सकता है कि समझ में आ जाए साहिब जी। अपनी कृपा बनाए रखना ऐ मालिक!

225. गुरुजी का समाधि स्थल, नीलकंठ धाम के नाम से प्रख्यात है।

गुरुजी का समाधि स्थल, नीलकंठ धाम के नाम से प्रख्यात है। यह नजफगढ़ रोड़ दिल्ली में शिर्डी साईं बाबा मंदिर के समीप स्थित है यहाँ प्रतिदिन हजारों गुरुजी के भक्त सुबह और शाम माथा टेकने और गुरु दर्शन हेतु आते हैं। समाधि के अलावा इस परिसर में भगवान् शिव का एक सुन्दर मंदिर भी निर्मित है। मंदिर के सुचारु रूप से नियंत्रण और शिव भक्तों की जिज्ञासा हेतु दो पंडित नियुक्त हैं। लोग उन्हें पंडित जी और छोटे पंडित जी के नाम से संबोधित करते हैं। गुरुजी के शिष्यगन भी अक्सर आते हैं समाधि पर माथा टेकने सौभाग्य से मुझे भी यह ईश्वरीय अवसर मिलता है। सप्ताह में एक बार । जनवरी 2013 सप्ताह के शुरु में मैं

गुरुजी के बेडरूम में खड़ा था और जल ग्रहण कर रहा था। इतने में छोटे पंडित जी ने आकर मुझसे जल मांगा जैसे ही मैंने उन्हें जल दिया, वह कहने लगे, "पापाजी, आप ने मेरा चश्मा देखा?" देखिए इसके शीशे काफी पतले हैं। नज़र बहुत कमजोर होने के कारण यह शीशे पहले बहुत मोटे हुआ करते थे। "पिछले महीने से मैं यह जल लगातार ले रहा हूँ और अपनी आँखों में छींटे भी मार रहा हूँ कुछ दिन पहले मुझे ठीक तरह से नज़र नहीं आ रहा था तो मैंने आंखें टेस्ट कराई। पता चला कि मेरा तो नम्बर बदल गया है और बहुत ही कम हो गया। डाक्टर ने मुझे बहुत कम नंबर का नया चश्मा बना दिया है। मेरी आँखों का इस जल से ठीक होना बहुत बड़ा अचम्भा है। रोज़ लोग मुझसे जल मांगते और मैं देता था, अतः एक दिन मैंने सोचा कि मैं भी अपनी आँखों में छींटे लगा कर देखूँ कि क्या असर होता है। एक महीने के बाद जो नतीजा निकला उसे देख कर मैं आश्चर्यचकित रह गया। क्या कमाल कर दिया गुरुजी के जल ने, मेरी नज़र का नंबर इस तरह से गिरना मेरी और डाक्टर की समझ से परे था। चिकित्सा विज्ञान के अनुसार यह असंभव था। समाधि के जल ने क्या किया इसका उत्तर किसी के भी पास नहीं है। "बस एक ही विकल्प बचा है मेरे पास और वह यह है कि पूर्ण विश्वास व्यक्त करने पर गुरुजी से कुछ भी प्राप्त किया जा सकता है", पंडित जी कहने लगे!!

हे गुरुदेव, पूर्ण विश्वास से परिपूर्ण लोगों के दुख निवारण हेतु, आपकी समाधि एवं आप में कोई अंतर नहीं!

सौभाग्य से मैं बीते समय को याद करता हूँ जब गुरुजी ने कहा था, "रज्जे, मेरा जल उन लोगों के हर एक दुख का निवारण है जो मेरे पास पूर्ण विश्वास के साथ आते हैं"

जय गुरुदेव

226. गुरुजी के वक्ष पर ओम के दर्शन

गुरुजी के वक्ष पर ओम के दर्शन। एक बार गुरुजी हम सब शिष्यों को लेकर हरिद्वार, गंगा में किसी महत्वपूर्ण स्नान हेतु गए हुए थे।
शिष्यों में उनके खास शिष्य सीताराम जी के पुत्र बोबी भी इस यात्रा में साथ थे। बहुत लाडले थे बोबी और गुरुजी उन्हें बहुत दुलार करते थे।
गंगा तट पर, स्नान से पूर्व खास आदेश था कि जब वे स्नान कर रहे हों तो कोई भी उनकी ओर नहीं देखे। छोटी सी उम्र का बोबी सोच में पड़ गया कि कौन सी खास बात

है कि गुरुजी की ओर देखना वर्जित है। शरारती स्वभाव के कारण उसने ठान लिया कि वो छुप कर जाएगा और देखेगा। अतः बोबी कामयाब हो गया उसने देख लिया उनकी पीठ की ओर। लेकिन बोबी आश्चर्य चकित था ओम सीधा नहीं बल्कि उल्टी दिशा में था। वह सोच ही रहा था कि गुरुजी ने धूम कर उसे देख लिया। गुरुजी कहने लगे, "तुझे ओम देखना है? देख मेरी छाती की ओर"।

बोबी देख कर दंग रह गया। पीठ की ओर से उल्टा दिखने वाला आम छाती की तरफ से बिल्कुल सीधा दिख रहा था। यानि पीठ और छाती में ओम आर पार था।

असंभव--- यह कैसे हो सकता है? यह तो ऐसा लगता है कि कहीं पर रखी हुई चीज़ को सामने से देखो और फिर घूम कर पीछे की ओर देखे तो तो उसका आकार उल्टा और सीधा नज़र आता है। मगर यह ओम कोई इम्प्रेशन नहीं बल्कि स्थूल है। आगे और पीछे से दर्शाने वाला ये ओम ऐसा लगता है जैसे लिखा नहीं बल्कि रखा गया हो।

बड़े-बड़े करिश्मे देखे होंगे हम सब ने लेकिन ऐसा कभी नहीं देखा और न ही कही सुना...

ऐसे महागुरु जी के सानिध्य में उनके चरणों में आ कर मैं तो धन्य हो गया ऐ मालिक! साक्षात् ईश्वर जैसा उदाहरण है। आप को कोटि-कोटि प्रणाम गुरुवर! मेरे अंग संग रहना साहिब जी और अपनी कृपा हमेशा बनाए रखना।

227. अतः सीताराम जी ने पूछा, "गुरुजी यह धाव कैसा था?"

गुरुजी के मुख्य शिष्यों में सीता राम जी उनके साथ पैदल चल रहे थे। एक दिन अचानक उन्होंने ध्यान से नोट किया कि गुरुजी अपने एक टांग पर वजन नहीं ले रहे थे। कारण पूछने पर गुरुजी ने अपनी पैंट ऊपर की तो उनकी जांघ पर धाव था। धाव ताजा था, अतः सीताराम जी ने पूछा, "गुरुजी यह धाव कैसा है ?"

गुरुजी ने कहा, "ओ बेटा, आज जब मैं शेव कर रहा था तो मैंने देखा कि ऍफसी शर्मा सड़क दुर्धटना

में धायल होने वाले हैं।" मैंने ब्लेड हाथ में लिया और अपनी जांध को काट कर खून निकाल दिया और मालिक से कहा,"लो जी, आप को खून ही चाहिए था ना, लेलो और अब शर्मा जी सही सलामत रहने चाहिए" कितना सरल सा रिश्ता है गुरूजी और भगवान के बीच। जिसके दर्शन मात्र के लिए बड़े -बड़े महापुरूष, साधाक और आत्माजन वर्षो तपस्या में लीन रहे हैं और गुरुजी का ईश्वर के साथ इतना नजदीकी संपर्क? समझ से बहुत परे है ये तथ्य शर्मा जी गाँधी नगर से रोज़ अपने दफ्तर साइकल से आया करते थे जाहिर है कि गुरूजी अपने शिष्यों को आत्मिक रूप से सदैव अपने संपर्क में रखते हैं।
और ऐसे में जो होना था, वह देख लिया – और जो किया, उसे समझने के लिए पता नहीं कितने जन्म लेने होंगे।
प्रणाम, प्रणाम गुरूजी।

228. गुरुजी ने आँखें खोली, मुक्ता की ओर देखा और मिस होली चाइल्ड का वरदान दे दिया।

बिलकुल महादेव की भांति-गुरु जी वरदान देने के लिए तत्पर पूर्ण फराखदिली के साथ मुक्ता शेखरी, मेरी दूसरे नम्बर की बेटी होली चाईल्ड स्कूल में 11 वीं कक्षा में पड़ती थी, स्कूल का वार्षिक उत्सव मनाया जा रहा था और उसमें मिस होली चाईल्ड के खिताब की प्रतियोगिता के लिए उसने एक गीत के साथ कत्थक नृत्य की तैयारी की, प्रतियोगिता से एक दिन पहले उसने गुरुजी के पास गुडगाँव जा कर खिताब जीतने

की प्रार्थना की और गुरूजी से आग्रह किया कि वे उसका नृत्य देखें, गुरूजी मान गए।
स्थान के हॉल में सब भक्तों को दिवारों के साथ खड़े होकर नृत्य देखने का आदेश मिला। गुरूजी स्वयं स्थान पर खड़े हुए, अपनी उँगलियों से आँखें बंद करके ध्यान मुद्रा में चलें गए।
संगीत की धुन, "मोहे पनधट पे नन्दलाल छेड़ गयो रे" ज़ारे से बजने लगी और मुक्ता ने नृत्य शुरू कर दिया। कई मिनट के बाद जब नृत्य समाप्त हुआ तो गुरूजी ने आँखें खोली मुक्ता की ओर देखा और मिस होली चाइल्ड का वरदान दे दिया कमाल है, गुरूजी ने बंद आँखों से सारा नृत्य देख लिया। अदभुत तरीका था नृत्य देखने का पहली बार तजुर्बा हुआ कि आँखें बंद करके भी नृत्य देखा जा सकता है, पर ऐसा तो सिर्फ गुरूजी ही कर सकते हैं, कोई अन्य नहीं, आफरीन ....
चार हजार विदयार्थियों और अध्यापिकाओं और प्रिंसिपल की तालियों से हाल गूँज उठा और मुक्ता को मुकुट पहना दिया। मुक्ता मिस होली चाईल्ड घोषित कर दी गई।
सबने क्या देखा, मुझे इसका ज्ञान नहीं। मैं तो गुड़गाँव स्थान का रात वाला दृश्य देख रहा था गुरूजी का वरदान मेरे कानों में गूँज रहा था। जैसा गुरूजी ने कहा था बिल्कुल वैसा ही हुआ --- मुक्ता मिस होली चाईल्ड बन गई। धन्य है गुरू देव आप अपने भक्तो और शिष्यों की इच्छाओं का पूर्ण ध्यान रखते हैं। आप साहिब जी आप को कोटि-कोटि प्रणाम गुरू देव इसी तरह अपनी कृपा बनाए रखना सब पर प्रणाम जी!
ॐ ॐ ॐ

229. गुड़गाँव से दिल्ली तक बिना ब्रेक लगाए।

1990 की अविस्मरणीय घटना का वृत्तांत श्री ललित मदान की आप बीती और उसी की जुबान से :
गुरूजी गुड़गाँव में अपने स्थान पर विराजमान थे उनके दफ्तर के सहायक, नागपाल जी भी वहाँ उपस्थित थे। आफिस के किसी टूअर प्रोग्राम के बारे में बातचीत चल रही थी कि अचानक ललित मदान नामक एक युवा पुरूष आया और उनकी बातचीत में दिलचस्पी लेने लगा। यह जान कर कि उनका टूअर बरेली शहर में बना है, "गुरूजी बरेली शहर में मेरी जान पहचान काफी है और वहाँ का डी.सी. मेरा मित्र

है। मैं उसे सन्देश भेज दूँगा और वो आपके रहने का और बाकी सुविधाओं का पूरा पंबन्ध कर देगा"।
शहर में मेरी जान पहचान काफी है और वहाँ का डी.सी. मेरा मित्र है। मैं उसे सन्देश भेज दूँगा और वो आप के रहने का और बाकी सुविधाओं का पूरा प्रबन्ध कर दिया"।
सुनकर गुरूजी ने उसकी तरफ देखा परन्तु कहा कुछ नहीं। कुछ समय के बाद गुरूजी अपने आफिस, दिल्ली जाने के लिए उठे। ललित मदान भी उठा और बाहर पहुँचने पर उन्हें अपनी कार में बैठने के लिए आग्रह करने लगा क्योंकि उसने भी दिल्ली जाना था, अतः गुरूजी व नागपाल जी उसकी कार में बैठ गए। नागपाल आगे की ओर गुरूजी पिछली सीट पर बैठ गए।
बैठने के बाद एक अजीब सी बात कही गुरूजी ने, "ललित, मैं इस शर्त पर तेरे साथ बैठा हूँ कि तू कर्ज़न रोड, मेरे आफिस पहुँच कर ही कार को ब्रेक लगाएगा, रास्ते में नही"। सुन कर ललित मदान सोच में पड़ गया कि चालीस मील का लम्बा सफ़र है और रास्ते में इतना ट्रैफिक होता है कई ट्रैफिक लाईट भी आएँगी, तो लम्बे सफ़र में बिना ब्रेक लगाए कर्ज़न रोड पहुँचना कैसे संभव होगा। सोचते-सोचते उसने गाड़ी स्टार्ट कर दी और रवाना हो गया।
गाड़ी चल पड़ी और चलते-चलते गुडगाँव से निकल कर दिल्ली की सड़क पर चलने लगी। रास्ते में ना तो किसी कार या किसी स्कूटर ने ललित को ब्रेक लगाने के लिए बाध्य किया और ना ही कोई लाल बत्ती ही आयी।
ललित मुझे कहने लगा, "पापाजी, कमाल हो गया, मेरे आगे जाने वाली 12 से 15 कारों ने एक-एक करके अपने आप अपना बायाँ इंडिकेटर दे कर रास्ता छोड़ दिया और

मुझे ओवरटेक करने दिया। मैं बिना ब्रेक लगाए कार चलाता गया। चालीस मील का सारा रास्ता बिलकुल साफ़ था एक बार भी ब्रेक लगाने की जरूरत नहीं पड़ी।" ललित आफिस पहुँच गया। बिलकुल भौंचक्का और स्तम्भ सा। "असंभव बिलकुल असंभव हुआ मेरे साथ"। मैंने हजारों बार कार में यात्रा की है, लेकिन ऐसा कभी नहीं हुआ कि चालीस मील का लम्बा सफर और वह भी रश से भरा हुआ तय किया मैंने, बिना एक बार भी ब्रेक लगाए"। मेरा दिमाग रुक सा गया। "मैं उठा, कार से बाहर आया और गुरुजी के पैरों पर गिर गया"। क्या चमत्कार किया आपने गुरुजी? पिछली सीट पर बैठ कर क्या कर रहे थे आप हे गुरुदेव? कैसे कंट्रोल कर रहे थे इतने लम्बे रास्ते के ट्रैफिक को"।

आज से पहले दर्जनों वी आई पी और मिनिस्टरों के साथ उठना बैठना रहा। बड़ा प्रभावित होता था मैं उनके संपर्क में लेकिन आज के इस वाक्या ने सिद्ध कर दिया कि गुरुजी के समक्ष कोई भी वी आई पी, है ही नहीं।

धन्य हैं गुरुदेव आप! भगवान् की ही तरह, आप भी सबकुछ कर सकते हैं और किसी को अवगत कराये बगैर ... कोटि-कोटि प्रणाम आपको। हम पर अपनी कृपा बनाए रखना है गुरुदेव!

230. गुरुजी ने कहा, "बेटा, एक जग लस्सी का बनाओ और सब को पिला दो।

गुरुजी ने कहा, "बेटा, एक जग लस्सी का बनाओ और सब को पिला दो। गुरुजी विराजमान थे और चार पाँच लोग उनके चरणों में बैठे थे। मौसम काफी गर्मी का था अतः उन्होंने आदेश दिया कि एक जग में लस्सी बनाओ और सब को पिला दो। बड़ा ही अच्छा मूड लग रहा था उनका। सेवादार हाथ में जग ओर कुछ गिलास ले कर आया और जैसे ही उसने पिलाना शुरू किया, कुछ और लोग भी पहुँच गए गुरुजी के दर्शन हेतु। सेवादार ने गुरुजी की ओर

देखा तो उन्होंने कहा, "पिलाओ बेटा सब को पिलाओ"। गुरूजी की आज्ञा से वो गिलासों में लस्सी डालता गया और सब को देता चला गया। देखते-देखते उसने 12 लोगों को एक-एक गिलास लस्सी भर-भर के दे दिया। लस्सी जग में से निकलती गई और वो गिलासों में डालता गया। सन्न रह गया वो। जग में 4, 5 गिलास ही आ सकती थी लेकिन 12 गिलास कहाँ से आ गई।

उसने गुरूजी की ओर देखा तो वे साधारण सी मुद्रा में नज़र आ रहे थे जैसे 4 गिलास की क्षमता वाले जग में से 12 गिलास लस्सी का निकल जाना कोई खास बात न हो। कोई आश्चर्य की बात नहीं थी। उनके लिए जिस तरह अपने कोष से अथाह बारिश बरसाना भगवान् के लिए कोई आश्चर्य की बात नहीं, ठीक उसी तरह एक जग में से 13 गिलास लस्सी निकालना कोई अचम्भे की बात नहीं थी गुरूजी के लिए।

नतमस्तक साष्टांग प्रणाम है आपको, गुरूओं के गुरू-गुरूजी!

231. गर्भ धारण होना हर विवाहित स्त्री का सपना होता है...

गर्भ धारण होना हर विवाहित स्त्री का सपना होता है। और इस इच्छा के पीछे माँ बनने की भावना इतनी प्रबल होती है कि जीवन की शेष इच्छाएँ फीकी सी पड़ जाती हैं। इस अवस्था में, समय बीतने के साथ जब संतान उत्पत्ति का समय समीप आने लगता है, तब एक भय भी जागृत होता है कि अत्यधिक पीड़ा सहनी पड़ेगी।

अब बात कुछ इस प्रकार हुई कि गुरुजी अपने कमरे में अपने

बैड पर विराजमान थे। टाँगें पसारकर वे आधे लेटने की मुद्रा में थे।

मेरी बड़ी बेटी पंचु भी उसी अवस्था में थी। प्रणाम करने के उपरांत वह बोली, "गुरुजी, मुझे बहुत डर लग रहा है। सुना है कि जब बच्चा जन्म लेता है तो बहुत पीड़ा होती है।" गुरुजी ने उसकी ओर देखा, फिर अपने चरणों की तरफ़ इशारा करते हुए कहा,

"ये फूल उठा और खा जा।"

असल में उनके चरणों पर किसी भक्त ने फूलों की वर्षा की थी। मेरी बेटी ने उनके चरणों से गुलाब की कुछ पंखुड़ियाँ उठाईं और खा लीं।

समय अब निकट ही था।

कुछ दिनों बाद उसने अपने पहले बच्चे को जन्म दिया और उसे किसी भी प्रकार की पीड़ा नहीं हुई। पीड़ा का तो नामोनिशान तक नहीं था। इसके बाद उसने और बच्चों को भी जन्म दिया, परंतु कभी पीड़ा का अनुभव नहीं हुआ।

वही बेटी, जो आज गुरुजी की कृपा से दादी एवं नानी बन चुकी है, एक दिन अपने पिता के साथ अपनी ही कथा सुनाते.सुनाते बड़े गर्व से बोली, "ऐसे महागुरु की शिष्या होना असंभव सा लगता है – पर मैं तो हूँ।"

फिर वह स्वयं से प्रश्न करते हुए कहने लगी, "मैं अपने आप से सवाल करती हूँ और जवाब माँगती हूँ कि चंद फूलों की पंखुड़ियों को देखकर गुरुजी ने ऐसा क्या किया था कि वे दर्द निवारक बन गईं! उन्होंने उन्हें छुआ तक नहीं था, केवल देखा मात्र था!" फिर वह मुस्कुराकर बोली, "जानती हूँ पापा, कि इसका जवाब आपके पास भी नहीं है। और अगर

होगा भी, तो आप बताओगे नहीं – ऐसा मेरा मानना है।"
"बाक़ी, आप गुरुजी से इस पूरी बात की चर्चा अवश्य कीजिए और फिर उनसे पूछिए – 'हे गुरुदेव, क्या इस संसार में आपके जैसा कोई और है?'"
"पता नहीं, वे इसका उत्तर देंगे या नहीं। पर आप बताइए पापा, आप क्या कहते हैं?"

और मेरा उत्तर था –

"हाँ – खुद गुरुजी।"

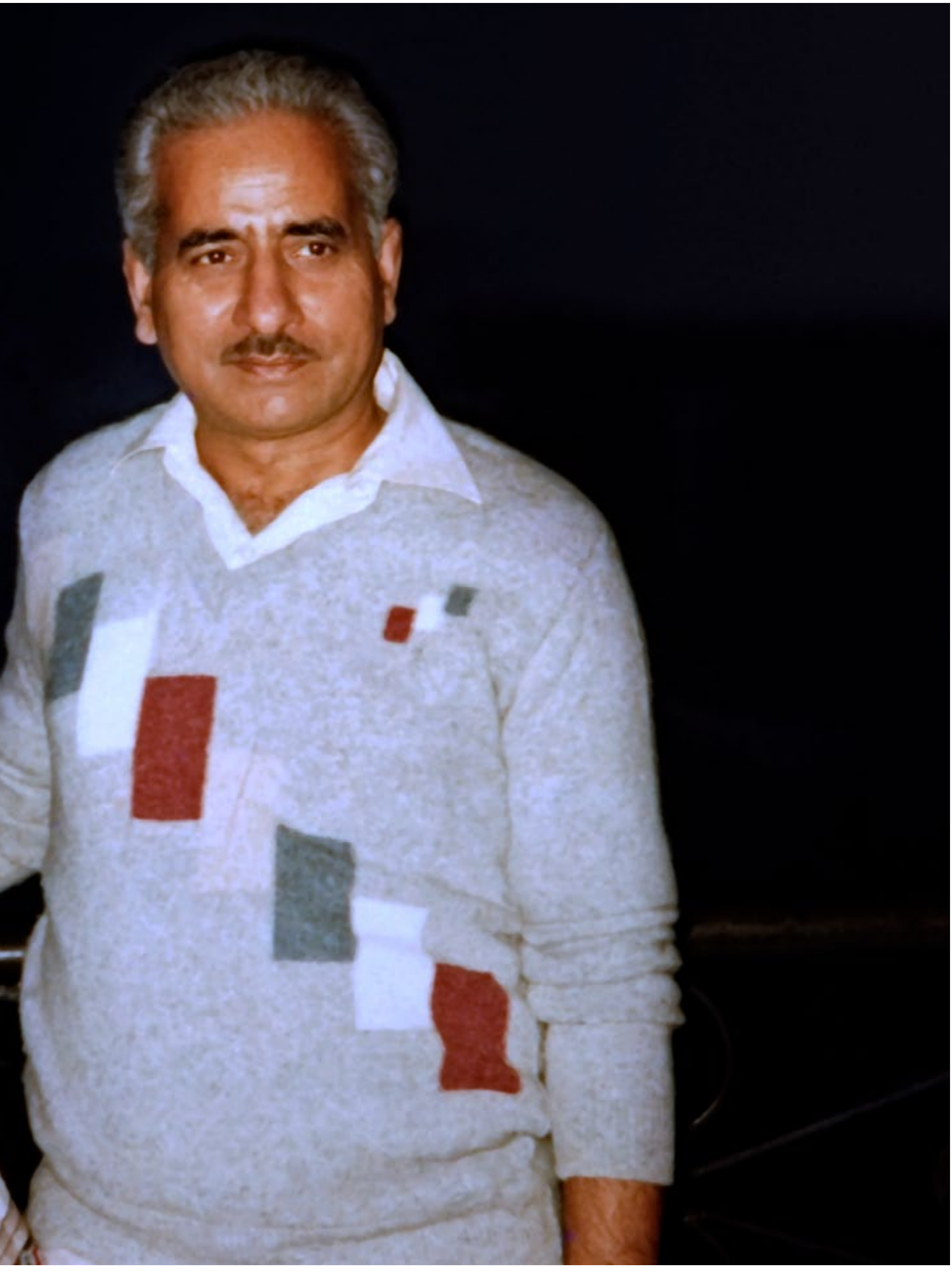

नोटः -
सभी कार्यक्रम की तिथियों के लिए, स्थान के नोटिस बोर्ड तथा गुरूजी की वेब साईट देखे--
www.gurujiofgurgaon.com

गणेश चर्तुथी, महाशिवरात्रि, गुरूपूर्णिमा धनतेरस एवं प्रत्येक बड़े वीरवार पर सेवा के लिए :

हिमगिरी पब्लिक स्कूल,
सैक्टर 10-A, पटौदी रोड,
कादीपुर गाँव के पास,
गुड़गाँव। हरियाणा

बंसत-पंचमी व निर्वाण दिवस पर भंडाराः

नीलकण्ठ धाम,
नजफ़गढ. - तिलकनगर रोड,
निकट साँई बाबा मंदिर,
नजफ़गढ़,
नई दिल्ली-110043

गुरूजी का मुख़्य स्थान 1

हिमगिरी पब्लिक स्कूल,
सैक्टर 10-A, पटौदी रोड़,
कादीपुर गाँव के पास,
गुड़गाँव। हरियाणा

गुरूजी का मुख़्य स्थान 2

हिमगिरि,
मकान नं0 702, सैक्टर 7,
जय सिनेमा के पीछे,
गुड़गाँव। हरियाणा

गुरूजी का जन्म स्थान

शीतला मंदिर,
दिल्ली गेट,
ग्राम व पोस्ट हरियाना,
ज़िला होशियारपुर (पंजाब)

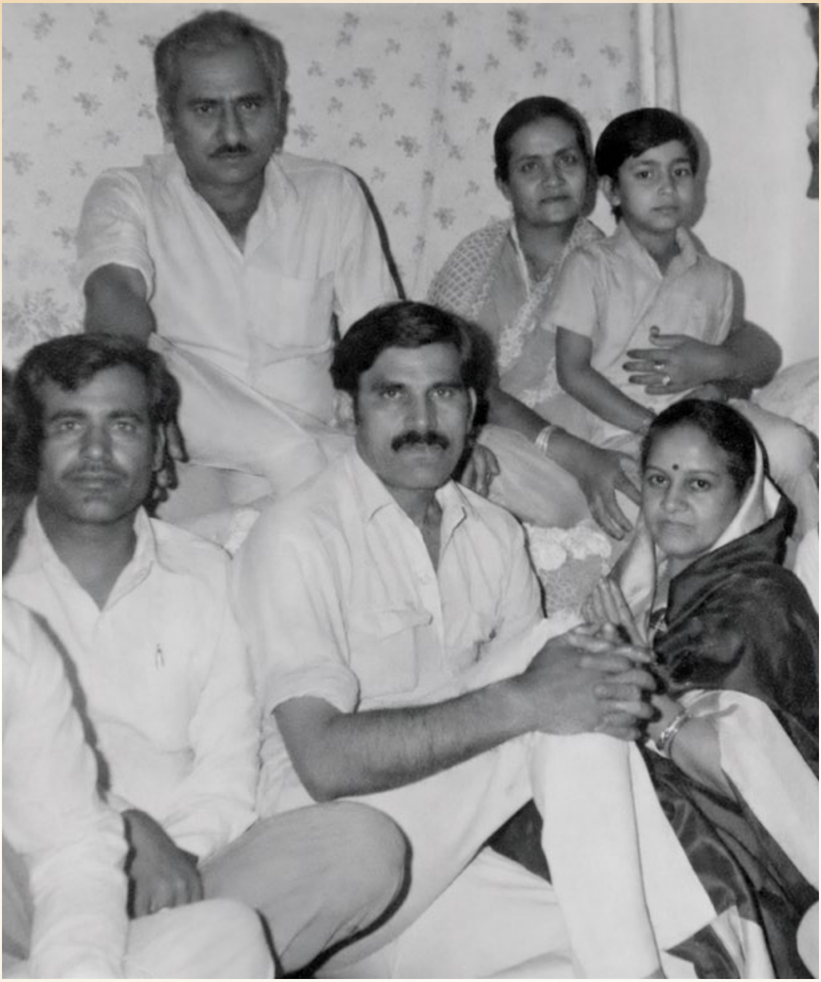

गुरुजी
गुड़गाँव वाले

अविश्वसनीय झलकियाँ
भाग-5